पाठावली

हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा (300)

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

पाठावली

हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा (300)

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

प्रथम संस्करण : 2006

मूल्य : रुपए 65·00

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा–282005 द्‌वारा प्रकाशित और
मै. परीक्षा समिति प्रेस, आगरा–282005 से मुद्रित।

Pathwali (Hindi Bhasha Dakshta Uchcha Diploma-300)
Book No. 33 (BVP)

प्रथम प्रारूप

संकल्पना एवं संयोजन
प्रो. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव
परामर्श
डॉ अरविन्द कुलश्रेष्ठ
अतिथि सहयोगी
प्रो. रामवीर सिंह
प्रो. चतुर्भुज सहाय
प्रो. रामलाल वर्मा

विभागीय सहयोगी (n. 33)
डॉ. देवेंद्र शुक्ल
डॉ. रमा सूद
डॉ. इंदिरा सिंह
डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी
डॉ. वीना माथुर
सुश्री पुष्पा बूलचंदानी

द्वितीय संशोधन

प्रो. वशिनी शर्मा : प्रो. रामवीर सिंह
डॉ. अरुण चतुर्वेदी : डॉ. मीरा सरीन
डॉ. सुशीला थामस : डॉ. पुष्पा बूलचंदानी
डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी : डॉ. वीना माथुर

तृतीय संशोधन

आगरा मुख्यालय
प्रो. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव
प्रो. अरुण चतुर्वेदी
प्रो. मीरा सरीन
डॉ. अल्पना शर्मा

दिल्ली केंद्र
प्रो. श्रीश चंद्र जैसवाल
डॉ. सुशीला थामस
डॉ. अपर्णा सारस्वत
डॉ. मंजू राय
डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
डॉ. मनोरमा अग्रवाल

परामर्शदाता

प्रो. वी. रा. जगन्नाथन
प्रो. चतुर्भुज सहाय
प्रो. वशिनी शर्मा
डॉ. पुष्पा श्रीवास्तव

प्रो. शंभुनाथ (निदेशक)
प्रो. रामवीर सिंह
डॉ. असगर वज़ाहत
डॉ. अरुण कमल

आमुख

भारत सरकार द्वारा स्थापित केंद्रीय हिंदी संस्थान, द्वितीय और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा और साहित्य के विकास, शोध कार्य, अध्ययन-अध्यापन और प्रशिक्षण से संबंधित विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति में 1961 से संलग्न है। भारत के हिंदीतर प्रदेशों के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों से अनेक छात्र-छात्राएँ प्रतिवर्ष हिंदी-भाषा, साहित्य और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए यहाँ आते हैं।

प्रसन्नता का विषय है कि विदेशी छात्र-छात्राओं की पाठ्यपुस्तकें पहली बार प्रकाशित रूप में उन्हें उपलब्ध कराई जा रही हैं। इन पाठ्यपुस्तकों में संकलित पाठों का चयन विदेशी छात्रों और उनसे संबंधित विभिन्न समस्याओं और वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह संकलन अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल होगा।

शंभुनाथ

(प्रो. शंभुनाथ)

निदेशक

भूमिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्‌वारा संचालित एक स्वायत्तशासी शैक्षिक संस्था है, जहाँ हिंदी के द्‌वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में अध्ययन–अध्यापन और प्रशिक्षण संबंधी कार्य संपादित किए जाते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग केंद्रीय संस्थान का एक महत्वपूर्ण विभाग है जहाँ प्रतिवर्ष विश्व के कोने–कोने से छात्र–छात्राएँ हिंदी भाषा और साहित्य तथा भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने के लिए आते हैं। इन छात्रों के लिए पाँच स्तरों के क्रमिक पाठ्‌यक्रम चलाए जाते हैं–

1. हिंदी भाषा दक्षता प्रमाण–पत्र	(प्रथम स्तर – कक्षा 100)
2. हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा	(द्‌वितीय स्तर – कक्षा 200)
3. हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा	(तृतीय स्तर – कक्षा 300)
4. हिंदी भाषिक अनुप्रयोग डिप्लोमा	(चतुर्थ स्तर – कक्षा 400)
5. हिंदी शोध डिप्लोमा	(पंचम स्तर – कक्षा 500)

हिंदी साहित्य से परिचित कराने के लिए विभिन्न कक्षाओं के लिए चुनी हुई रचनाओं का संकलन तैयार किया गया है। इन पाठ्‌यपुस्तकों के लिए पाठों का चयन करते समय निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखा गया है –

1. पाठों में भारतीय संस्कृति की सामासिकता और उसकी उज्ज्वल छवि प्रतिबिंबित हो।
2. पाठ विभिन्न युगों के साहित्य का प्रतिनिधित्व करते हों।
3. पाठ विभिन्न प्रवृत्तियों के रचनाकारों का प्रतिनिधित्व करते हों।

4. पाठ विभिन्न विधाओं से संबंधित हों।
5. पाठ भाषा, विषय और अभिव्यक्ति की दृष्टि से विदेशी छात्रों लिए कठिन न हों।

सभी पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त की गई रचनाओं का उपयोग विशुद्ध रूप से शैक्षिक दृष्टि से किया जाता रहा है। इन पुस्तकों को अभी तक सभी कक्षाओं में टंकित रूप में प्रयुक्त किया जा रहा था तथा विभिन्न कारणों से इनके प्रकाशन की स्थिति नहीं बन पा रही थी। इस दृष्टि से प्रो. शंभुनाथ, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा साधुवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस कार्य को वरीयता दी। पाठ्यपुस्तकों के इन संशोधित संस्करणों के निर्माण में सहयोगी सभी महानुभावों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

– प्रो. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव

विषय सूची

पाठ – 1

कबीरदास

(कबीरदास जी भक्तिकाल की निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के एक महान कवि हैं। उनका जन्म 1398 ई. में हुआ था। उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वे एक महान समाज सुधारक कवि के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने की कोशिश की। कबीर का विश्वास था कि ईश्वर एक है और वह सर्वव्यापक एवं निर्गुण है। कबीरदास जी अवतारवाद, पैगंबरवाद व बहुदेववाद को असत्य मानते थे। वे जीवन में प्रेम को सबसे अधिक महत्व देते थे।

कबीर की भाषा में ब्रजभाषा, अवधी, मगही, भोजपुरी, बुंदेलखंडी, राजस्थानी, पंजाबी आदि का मेल है। अतः उसे खिचड़ी भाषा अथवा सधुक्कड़ी भाषा भी कहा जाता है। कबीरदास जी की प्रमुख रचनाओं को 'कबीर ग्रंथावली' में संगृहीत किया गया है।)

साखी

(दोहे)

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़े बन माहिं।

ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं।।

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार–सार को गहि रहे, थोथा देइ उड़ाय॥

करता था सो क्या किया, अब करि क्यों पछताय।
बोवै पेड़ बबूल को, आम कहाँ से खाय॥

दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करें, तो दु:ख काहे को होय॥

शब्दार्थ

माहिं	–	में
घट–घट	–	जगह–जगह, स्थान–स्थान
सुभाय	–	स्वभाव
सार–सार	–	अच्छी–अच्छी बातें
सुमिरन	–	याद करना
कस्तूरी	–	एक खास प्रजाति के मृग की नाभि में पाया जाने वाला एक सुगंधित पदार्थ (Musk)

प्रश्नः–

1. पठित अंश के आधार पर कबीर के काव्य की विशेषताएँ बताइए।
2. मृग वन में क्यों घूमता है?
3. दुनिया राम को क्यों नहीं देख पाती है?
4. भगवान वास्तव में कहाँ रहते हैं?

पारिभाषिक शब्द

सूप – अनाज साफ़ करने की एक विशेष वस्तु

लोकोक्तियाँ

बोवै पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से खाय।

पाठ – 2

सूरदास

(सूरदास जी भक्तिकाल की सगुण धारा की कृष्णाश्रयी शाखा के महान कवि हैं। उनको कृष्णकाव्य का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है। उन्होंने श्रीकृष्ण की बाल–लीलाओं का अद्‌भुत वर्णन किया है। ऐसा माना जाता है कि सूरदास जी जन्मांध थे। वे संगीत, काव्य और शास्त्र के विद्‌वान थे।

सूरदास जी 'अष्टछाप' के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवि थे। सूरदास जी वात्सल्य–रस के आचार्य हैं। उन जैसा वात्सल्य रस का मनोहारी चित्रण संसार का अन्य कोई कवि नहीं कर पाया है। सूरदास जी ने अपना समस्त साहित्य ब्रज भाषा में लिखा। उनकी प्रसिद्‌ध रचनाएँ सूरसागर, सूर–सारावली व साहित्यलहरी हैं।)

(पद)

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ।
मोसौं कहत मोल को लीन्हौं, तू जसुमति कब जायौ॥
कहा करौं इहि रिस के मारै, खेलन हौं नहिं जात।
पुनि–पुनि कहत कौन है माता, को है तेरो तात॥
गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तू कत श्यामल गात।
चुटकी दै–दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसकात॥
तू मोही कौं मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै।

मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि सुनि रीझै॥
सुनहु कान्ह, बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत।
'सूर स्याम', मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत॥

शब्दार्थ

खिझायौ	–	परेशान करना, चिढ़ाना
जायौ	–	जन्म दिया
रिस	–	नाराज़
गोधन	–	गाय रूपी संपत्ति
श्यामल	–	साँवला
गात	–	शरीर
तात	–	पिता
पुनि–पुनि	–	बार–बार
धूत	–	धूर्त, दुष्ट
खीझै	–	नाराज़ होती है, डाँटती है
रीझै	–	प्रसन्न होती है

प्रश्न:–

1. कृष्ण अपने भाई से क्यों नाराज़ हैं?
2. दाऊ कृष्ण को क्या कहकर चिढ़ाते हैं?
3. यशोदा कृष्ण की किन बातों को सुनकर प्रसन्न हो जाती हैं ?
4. यशोदा कृष्ण को कैसे समझाती हैं?

पाठ –3

तुलसीदास

(तुलसीदास जी भक्तिकाल की सगुण धारा की रामाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे। हिंदी साहित्य में तुलसीदास का स्थान सर्वोपरि है। तुलसीदास जी राम के परमभक्त थे। उनको भारत का लोकनायक कवि माना जाता है।

उन्होंने ब्रज व अवधी दोनों ही भाषाओं में उच्चकोटि का साहित्य लिखा है। उनकी प्रमुख रचनाएँ– रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली व दोहावली हैं। उनके द्‌वारा रचित 'रामचरितमानस' विश्वभर में प्रसिद्‌ध है। उसमें राम के संपूर्ण जीवन की कथा को बहुत सुंदर ढंग से रचा गया है।)

चौपाई

कबहूँ ससि माँगत आरि करै, कबहूँ प्रतिबिम्ब निहारि डरै।
कबहूँ करताल बजाय कै नाचत, मातु सबै मन मोद भरै।
कबहूँ रिसिआइ कहै हठि कै, पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी–मन–मन्दिर में बिहरैं॥

(कवितावली से)

दोहा

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥
अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू॥

(रामचरित मानस से)

पाठ – 4

बिहारी

(बिहारी रीतिकाल के बहुत अधिक सम्मानित व यशस्वी कवि हैं। उनके द्वारा लिखी केवल एक पुस्तक मिलती है, 'बिहारी सतसई' जिसमें कुल 719 दोहे हैं। एक–एक दोहे के अनेक भावार्थ निकलते हैं। भाषा, भाव व रस की दृष्टि से उनकी यह रचना बेजोड़ है। महाकवि बिहारीलाल जी शास्त्रों के ज्ञाता थे। उनकी रचनाओं में भक्ति, नीति व शृंगार का अद्भुत समन्वय मिलता है। इन दोहों में कवि का अथाह ज्ञान व अुनभव देखा जा सकता है। इन गुणों के कारण इनके द्वारा रचित दोहे अत्यधिक लोकप्रिय हो गए।

यद्यपि बिहारी राजाओं के आश्रय में रहते थे किंतु उनकी ख़ुशामद अथवा चापलूसी नहीं करते थे। उन्होंने अपनी विद्वता, दूरदर्शिता व काव्यत्व से आश्रयदाताओं को सदैव प्रभावित किया।)

दोहे

मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होइ॥

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यों–ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों–त्यों उज्जलु होइ॥

शब्दार्थ

आरि	–	परदा, ओट
निहारि	–	देखकर
करताल	–	ताली
रिसिआइ	–	नाराज़ होकर
हठि	–	बलपूर्वक
बिहरैं	–	घूमना, विचरण करना
बंदउँ	–	प्रणाम करता हूँ
सुबास	–	सुगंध
पदुम	–	कमल
सुरुचि	–	सुंदर स्वाद
अमिअ	–	अमर, अमृत
चूरन	–	चूर्ण
मूरि	–	मूल (जड़ी)
समन	–	हर्षित, हृदय
सकल	–	संपूर्ण
रुज	–	रोग, बीमारियाँ

प्रश्न:–

1. गोस्वामी तुलसीदास जी इस चौपाई में किसको प्रणाम कर रहे हैं?
2. उपर्युक्त चौपाई के आधार पर गुरु के चरणों की विशेषताएँ बताइए।

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै, भौंहनि हँसै, दैन कहै नटि जाय॥

शब्दार्थ

भव	–	संसार
बाधा	–	परेशानी, रुकावट
हरौ	–	दूर करो
झाँई	–	परछाई
नागरि	–	चतुर
हरित दुति	–	हरे रंग की चमक (रोशनी)
अनुरागी	–	प्रेम करने वाला
बूड़ै	–	डूबे
स्याम	–	श्याम, साँवला
मादकता	–	नशा
कनक	–	धतूरा (एक विषाक्त पदार्थ), सोना
बौराइ	–	पागल हो जाता है
जगु	–	दुनिया
बतरस	–	बातचीत से मिलने वाली खुशी
लुकाय	–	छिपाकर
सौंह	–	सौगंध
नटि जाय	–	मना कर देती है।

प्रश्न :–

1. बिहारी के दोहों की विशेषताएँ लिखिए।
2. बिहारी राधा की किन–किन विशेषताओं के बारे में जानते हैं?
3. प्रेम करने वाले हृदय की स्थिति कैसी होती है?
4. धतूरे और सोने में क्या अंतर है?
5. गोपियों ने कृष्ण की मुरली को क्यों छिपा दिया था?

पाठ – 5

हिम्मत और ज़िंदगी

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

(कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' राष्ट्रीय भावनाओं के ओजस्वी गायक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी समस्त रचनाओं में स्वदेशानुराग की भावना व पीड़ितों के प्रति सहानुभूति की भावना दिखाई देती है। दिनकर जी ने आधुनिक कविता को एक अद्भुत ओजमयी वाणी तथा भाषा–शैली प्रदान की। इनकी रचनाओं में कहीं जवानी का उद्घोष है, कहीं विद्रोह की हुंकार तो कहीं प्रेम और शृंगार का उच्चस्तरीय वर्णन है। हिंदी साहित्य के इतिहास में दिनकर का नाम क्रांति, युद्ध और प्रेम के कवि के रूप में सदैव अमर रहेगा। दिनकर की चार प्रमुख रचनाएँ हैं–'रेणुका, कुरुक्षेत्र, नील कुसुम और उर्वशी।)

ज़िंदगी के असली मज़े उनके लिए नहीं हैं जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं। बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है जो रेगिस्तान से आ रहे हैं, जिनका कंठ सूखा हुआ, होंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृत वाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है।

सुख देने वाली चीज़ें पहले भी थीं और अब भी हैं। फ़र्क यह हैं कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मज़े बाद में लेते हैं उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है।

जो लोग पाँव भीगने के खौफ़ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का ख़तरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएँगे।

चाँदनी की ताज़गी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है जो दिनभर धूप में थककर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की ज़रूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिनभर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है।

इसके विपरीत वह आदमी है जो दिनभर खिड़कियाँ बंद करके पंखों के नीचे छिपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चाँदनी के मज़े ले रहा है, लेकिन सच पूछिए तो वह ख़ुशबूदार फूलों के रस में दिन–रात सड़ रहा है।

उपवास और संयम, ये आत्महत्या के साधन नहीं हैं। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुंजीथाः'; जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता।

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था, और वह भी उस समय, जब उसके बाप के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी।

महाभारत के देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई; क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था।

ज़िंदगी की दो सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े–बड़े मक़सद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम–कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए।

दूसरी सूरत यह है कि उन ग़रीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है। क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है?

अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल बेख़ौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा भी करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस–पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है।

साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है।

झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मग्न रहता है।

अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, ज़िंदगी की चुनौती को कबूल नहीं

कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता। बड़े मौके पर साहस नहीं दिखाने वाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज़ सुनता रहता है, एक ऐसी आवाज़ जिसे वही सुन सकता है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता। यह आवाज़ उसे बराबर कहती रहती है, "तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए।" सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं उसका न मिलना, फिर भी, इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार सुनें कि तुममें हिम्मत की कमी थी, कि तुममें साहस का अभाव था, कि तुम ठीक वक्त पर ज़िंदगी से भाग खड़े हुए।

ज़िंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर एक घेरा डालता है, अंततः अपने ही घरों के बीच कैद हो जाता है और ज़िंदगी का कोई मज़ा उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में, उसने ज़िंदगी को ही आने से रोक रखा है।

ज़िंदगी से अंत में हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं। यह पूँजी लगाना ज़िंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को पलटकर पढ़ना है जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। ज़िंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह जानकर चलता है कि ज़िंदगी कभी ख़त्म न होने वाली चीज़ है।

अरे! ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की मरी हुई सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक-कोष को कौन बाहर लाएगा?

दुनिया में जितने भी मज़े बिखेरे गए हैं उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज़ भी तुम्हारी हो सकती है जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मान कर लौटे जा रहे हो।

कामना का अंचल छोटा मत करो, ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

शब्दार्थ

तत्व	–	पदार्थ, वस्तु
गोधूलि	–	शाम का समय
पूँजी	–	संपत्ति
ख़ौफ़	–	डर
मौक्तिक–कोष	–	मोतियों का ख़ज़ाना
लाक्षा गृह	–	लाख का घर
सेज	–	शय्या, बिस्तर
उपवास	–	व्रत
परमार्थ	–	परोपकार, दूसरों की भलाई
परास्त करना	–	हरा देना
सिफ़त	–	गुण, विशेषता
कब्ज़ा	–	अधिकार
मद्धिम	–	धीमी
जोखिम	–	कष्ट
अंतराल	–	भीतर
निर्झरी	–	झरना
हमजोली	–	मित्र

प्रश्न :–

1. ज़िंदगी के असली मज़े किसने लिए हैं?

2. भोजन का असली स्वाद कैसे मिलता है?

3. सबसे बड़ी ज़िंदगी कौन सी होती है।

4. हिम्मत और ज़िंदगी में लेखक ने मनुष्य को किस प्रकार का संदेश दिया है।

5. बड़ी हस्तियाँ किस तरह दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं?

6. ज़िंदगी की सबसे बड़ी सिफ़त क्या है?

7. ज़िंदगी की दो सबसे बड़ी सूरतें कौन–कौन सी हैं?

8. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करें–

(क) लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएँगे।

(ख) 'झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मग्न रहता है।'

(ग) अरे! ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की मरी हुईं सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक–कोष को कौन बाहर लाएगा?

(घ) कामना का अंचल छोटा मत करो, ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

•

पाठ –6

परीक्षा

–प्रेमचंद

(प्रेमचंद हिंदी साहित्य के महान कहानीकार हैं। प्रेमचंद की कहानी कला हिंदी कहानी कला का एक क्रांतिकारी विकास है। समकालीन कहानीकारों के वे प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक थे। उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा जीवन का सच्चा चित्रण किया। प्रेमचंद नीति, धर्म, कानून इन सबके ऊपर मनुष्यता को रखते हैं। समानता और मानव कल्याण उनका मूलमंत्र था। उनकी कहानियों में सर्वत्र स्वाभाविकता का समावेश है। इसीलिए वे विश्व की श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती हैं। हिंदी साहित्य में कहानी का द्रुत विकास और उत्कर्ष प्रेमचंद द्वारा ही हुआ। उनकी कहानियों में समाज का व्यापक परिवेश व्याप्त है। आदर्श और यथार्थ का सुंदर समन्वय इनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है।)

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजान सिंह बूढ़े हुए तो उन्हें परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से उन्होंने विनती की। "दीनबंधु! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की, अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता हूँ। दूसरे, अब अवस्था भी ढल गई, राज–काज सँभालने की शक्ति नहीं रह गई, कहीं भूल–चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग़ लगे, सारी ज़िंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।"

राजा साहब अपने अनुभवी और नीति–कुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। उन्होंने बहुत समझाया। लेकिन जब दीवान साहब न माने तो हार कर उन्होंने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान उन्हीं को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला– "देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की आवश्यकता है। जो सज्जन अपने को इसके योग्य समझें, वे वर्तमान दीवान सुजान सिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह ज़रूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट हों, मगर उन्हें हृष्ट–पुष्ट होना आवश्यक है। मंदाग्नि के मरीज़ों को यहाँ तक कष्ट उठाने की कोई ज़रूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन–सहन, आचार–विचार, विद्या, कर्म परंतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे वे ही इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।"

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना–अपना भाग्य परखने के लिए चल पड़े। देवगढ़ में नए–नए और रंग–बिरंगे आदमी दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, तो कोई मद्रास से। कोई नए फैशन का प्रेमी था तो कोई पुरानी सादगी पर मिटता हुआ। पंडितों और मौलवियों को भी अपने–अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम को रोया करते थे, तो यहाँ उसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। रंगीन तमग़े, चोगे और नाना प्रकार के अँगरखे और कनटोप देवगढ़ में अपनी सजधज दिखाने लगे, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढका रहता है।

सरदार सुजान सिंह ने इन महानुभावों के आदर–सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने–अपने कमरों में बैठे हुए रोज़ेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते उषा का दर्शन करते थे। मिस्टर 'ब' को हुक्का पीने की लत थी पर आजकल बहुत रात गए किवाड़ बंद करके अँधेरे में सिगरेट पीते थे। मिस्टर 'स', 'द' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बग़ैर नौकर से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती। मिस्टर 'ल' को किताबों से घृणा थी, परंतु आजकल वे बड़े–बड़े धर्मग्रंथ खोले पढ़ने लगते थे कि एक महीने की झंझट है, किसी तरह काट लें, यहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है ?

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है ?

एक दिन नए फ़ैशन वालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आख़िर एक विद्या है, इसे क्यों छिपा रखें, संभव है, कुछ हाथों की सफ़ाई ही काम कर जाए।

चलिए तय हो गया, मैदान बन गया, खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ़्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिल्कुल निराला था। पढ़े-लिखे भले मानुस शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल-खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद लेकर तेज़ी से उठते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर के खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे मानो लोहे की दीवार है।

संध्या तक यह धूमधाम रही। लोग पसीनों में तर हो गए। खून की गरमी, आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफ़ते-हाँफ़ते बेदम हो गए, लेकिन हार जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कई खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए उस नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और उसकी चढ़ाई उतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहिए को हाथों से ढकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमज़ोर। गाड़ी ऊपर को न चढ़ती। और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसक कर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उबरने का नाम न लेती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई सहायक नज़र न आता था। गाड़ी को अकेले छोड़कर वह कहीं जा भी न सकता था। बड़ी विपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए झूमते-झामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा, परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ।

खिलाड़ियों ने भी उसको देखा, मगर बंद आँखों से। उनमें सहानुभूति का नाम न था, उनमें स्वार्थ था, मद था, मत्सर था, उदासीनता थी, वात्सल्य का नाम भी न था। लेकिन उसी समूह में ऐसा मनुष्य भी था, जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लंगड़ाता हुआ वह धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात् उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। वह ठिठक गया। उसे किसान को देखते ही सब बात समझ में आ गई। हॉकी किनारे रख दी, कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला "मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ ?"

किसान गाड़ी पर जाकर बैठा, युवक ने पहिए को जोर लगाकर खिसकाया। कीचड़ बहुत ज़्यादा थी। वह घुटने तक ज़मीन में गड़ गया, लेकिन उसने हिम्मत न हारी।

उसने फिर ज़ोर लगाया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा, बैलों को सहारा मिला, उनकी भी हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार ज़ोर लगाया, बस गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला, "महाराज! आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा, "अब मुझे कुछ इनाम देते हो ?"

किसान ने गंभीर भाव से कहा, "नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"

युवक ने किसान की तरफ ग़ौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ कहीं यह सुजान सिंह तो नहीं ? आवाज़ मिलती है। चेहरा-मोहरा भी वही है। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद वह उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला, "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है। परिश्रम से ही सफलता प्राप्त होती है।"

निदान महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से ही अपनी किस्मत का फ़ैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम आज किसके नसीब जागेंगे, न जाने

किस पर लक्ष्मी की कृपा दृष्टि होगी। संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया, शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राजा के कर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवार सब रंग-बिरंगी सज-धज बनाए दरबार में आ विराजे। उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजान सिंह ने खड़े होकर कहा– "मेरे दीवानी के उम्मीदवार महाशयो, मैंने आप लोगों को जो कुछ कष्ट दिया हो, उसके लिए क्षमा कीजिए। मुझे इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ-ही-साथ आत्मबल भी। हृदय वही है, जो उदार हो, आत्म-बल वही है, जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे, और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुण वाले संसार में कम हैं, और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं। उन तक हमारी पहुँच ही नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।"

रियासत के कर्मचारी और रईसों ने पं. जानकीनाथ की तरफ देखा और उम्मीदवारों के दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था और इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फ़रमाया। "आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं ज़ख्मी होने पर भी एक ग़रीब किसान की भरीं हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर बढ़ाए उसके हृदय में साहस, आत्म-बल और उदारता का निवास है। ऐसा आदमी ग़रीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खाए, परंतु दया और धर्म के मार्ग से कभी न हटेगा।"

शब्दार्थ

परमात्मा	–	ईश्वर
अवस्था	–	स्थिति, उम्र
मंदाग्नि	–	अपच, indigestion

हृष्ट-पुष्ट	–	स्वस्थ
कैद	–	प्रतिबंध
नसीब	–	भाग्य
तमग़ा	–	Medal
चोगा	–	Gown
सनद	–	प्रमाण
अँगरखा	–	एक विशेष वस्त्र
उषा	–	प्रातःकाल
महानुभाव	–	बड़े लोग, आदरणीय
चित्त	–	हृदय
मत्सर	–	ईर्ष्या
निदान	–	परिणाम
किस्मत	–	भाग्य
फ़ैसला	–	परिणाम
उदार	–	बड़े दिल वाला
कीर्ति	–	यश
शिखर	–	चोटी
सत्कार	–	सम्मान
संकल्प	–	इरादा, प्रतिज्ञा
दृढ़	–	मज़बूत

प्रश्नः–

1. सुजान सिंह ने सुयोग्य दीवान चुनने के लिए किस प्रकार का विज्ञापन निकाला?

2. अपनी–अपनी योग्यता सिद्‌ध करने के लिए उम्मीदवार किस प्रकार का व्यवहार कर रहे थे?

3. सुजान सिंह ने किस प्रकार सुयोग्य दीवान चुना?

4. निम्नलिखित पंक्तियों के भावों को स्पष्ट करें–

   (i) भूल–चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग़ लगे, सारी ज़िंदगी की नेकनामी मिट्‌टी में मिल जाए।

   (ii) नहीं मालूम आज किसके नसीब जागेंगे, न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपा दृष्टि होगी।

   (iii) मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है?

   (iv) गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।

पाठ – 7

नीलू

– **महादेवी वर्मा**

(श्रीमती महादेवी वर्मा प्रधान रूप से कवि तथा ललित गद्यकार हैं। ललित गद्यकार के रूप में वह अपने संस्मरणों तथा रेखाचित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी समस्त रचनाओं में भावात्मकता व कलात्मकता का सुंदर समन्वय मिलता है। यद्यपि उनका मूल व्यक्तित्व कवि का है तथापि उन्होंने चिंतन प्रधान निबंधों की भी रचना की है। उनके कुछ मुख्य संस्मरण, रेखाचित्र तथा निबंध संग्रह हैं:– अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, मेरा परिवार, शृंखला की कड़ियाँ आदि।)

नीलू की कथा उसकी माँ की कथा से इस प्रकार जुड़ी हुई है कि एक के बिना दूसरी अपूर्ण रह जाती है। उसकी अल्सेशियन माँ उत्तरायण में लूसी के नाम से पुकारी जाती थी। हिरनी के समान वेगवती, साँचे में ढली हुई देह जिसमें व्यर्थ कहने के लिए एक तोला भी मांस नहीं था, ऊपर काला आभास देने वाले भूरे पीताभ रोम, बुद्धिमानी का पता देने वाली काली पर छोटी आँखें, सजग खड़े कान और सघन रोयेंदार तथा पिछले पैरों के टखनों को छूने वाली लंबी पूँछ, सब कुछ उसे राजसी विशेषता देता था। थी भी वह सामान्य कुत्तों से भिन्न।

अल्सेशियन कुत्ता एक ही स्वामी को स्वीकार करता है। यदि परिस्थितियों के कारण एक व्यक्ति का स्वामित्व उसे सुलभ नहीं होता तो वह सबके साथ सहचर जैसा आचरण करने लगता है। दूसरे शब्दों में, आदेश किसी का नहीं मानता, परंतु सबके स्नेहपूर्ण अनुरोध की रक्षा में तत्पर रहता है। लूसी की स्थिति भी स्वच्छंद सहचरी के समान हो गई थी।

उत्तरायण से जो पगडंडी दो पहाड़ियों के बीच से मोटर मार्ग तक जाती थी उसके अंत में मोटर स्टॉप पर एक ही दूकान थी, जिसमें आवश्यक खाद्य सामग्री प्राप्त हो सकती थी। शीतकाल में यह दो पर्वतीय भित्तियों का अंतराल बर्फ़ से भर जाता था और उसमें पगडंडी के अस्तित्व का चिह्न भी शेष नहीं रहता था।

तब दुकान तक पहुँचने में असमर्थ उत्तरायण के निवासी, लूसी के गले में रुपए और सामग्री की सूची के साथ एक बड़ा अंगोछा या चादर बाँधकर उससे सामान लाने का अनुरोध करते थे। वंश परंपरा से बर्फ़ में मार्ग बना लेने की सहज चेतना के कारण वह सारे व्यवधान पार कर दुकान तक पहुँच जाती। दुकानदार उसके गले से कपड़ा खोलकर रुपया, सूची आदि लेने के उपरांत सामान की गठरी उसके गले या पीठ से बाँध देता और लूसी सारे बोझ के साथ बर्फ़ीला मार्ग पार करती हुई सकुशल उत्तरायण लौट आती। किसी–किसी दिन उसे कई बार आना–जाना पड़ता। कभी चीनी मँगवाई और चाय रह गई। कभी आटा याद रहा और आलू भूल गए। पर लूसी को मँगाने वालों के भुलक्कड़पन से कोई शिकायत कभी नहीं रही। गले में कपड़ा बाँधते ही वह तीर की तरह दुकान की दिशा में चल देती। उसकी तत्परता के कारण मँगाने वालों में भूलने की प्रवृत्ति बढ़ती ही थी।

एक दिन किसी अधिक ऊँचाई पर बसे पर्वतीय ग्राम से बर्फ़ में भटकता हुआ एक भूटिया कुत्ता दुकान पर आ गया और लूसी से उसकी मैत्री हो गई। उन दोनों में आकृति की वही भिन्नता थी जो एक तराशी हुई सुडौल मूर्ति और अनगढ़ शिला–खंड में होती है, परंतु दुर्दिन के साथी होने के कारण वे सहचर हो गए।

उन्हीं सर्दियों में लूसी ने दो बच्चों को जन्म देकर अपनी वंशवृद्धि की, किंतु उनमें से एक तो शीत के कारण मर गया और दूसरा अपनी ही जीवन उष्मा के बल पर उस ठिठुराने वाले परिवेश से जूझने लगा।

शीत ॠतु में प्रायः लकड़बग्घे ऊँचे पर्वतीय अंचल से नीचे उतर आते हैं और बर्फ़ में भटकते हुए मिल जाते हैं। वेसे तो यह हिंसक जीव कुत्तों से कुछ ही बड़ा होता है, परंतु कुत्ता इसका प्रिय खाद्य होने के कारण रक्षणीय की स्थिति में आ जाता है। सामान्य कुत्ते तो

लकड़बग्घे को देखते ही स्तब्ध और निर्जीव से हो जाते हैं। अतः उन्हें घसीट ले जाने में उसे कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। सामान्य भूटिया या अल्सेशियन कुत्ते उससे संघर्ष करते हैं अवश्य, परंतु पराजित ही होते हैं। चार-पाँच दिन के बच्चों को छोड़ कर लूसी फिर दुकान तक आने-जाने लगी थी।

एक संध्या के झुटपुटे में लूसी ऐसी गई कि फिर लौट ही नहीं सकी। बर्फ़ के दिनों में साँझ ही से सघन अंधकार घिर आता है और हवा ऐसी तुषार बोझिल हो जाती है कि गंध भी वहन नहीं कर पाती। इसी से प्रायः शीतकाल में घ्राणशक्ति के कुछ कुंठित हो जाने के कारण कुत्ते लकड़बग्घे के आने की गंध पाने में असमर्थ रहते हैं और उसके अनायास आहार बन जाते हैं। सवेरे बर्फ़ पर कई बड़े-छोटे पंजों के तथा आगे-पीछे घसीटने-घिसटने के चिह्न देखकर निश्चय हो गया कि लूसी ने बहुत संघर्ष के उपरांत ही प्राण दिए होंगे। बर्फ़ पर रक्त के पनीले धब्बे ऐसे लगते थे मानो किसी बालक की ड्राइंग-पुस्तिका के सफ़ेद पृष्ठ पर लाल स्याही की दावात उलट गई हो।

लूसी के लिए सभी रोए। परंतु जिसे सबसे अधिक रोना चाहिए था वह बच्चा तो कुछ जानता ही न था। एक दिन पहले ही उसकी आँखें खुली थीं, अतः माँ से अधिक वह दूध के अभाव में शोर मचाने लगा। दुग्ध चूर्ण से दूध बना कर उसे पिलाया, पर वह रज़ाई में पड़े रह कर माँ के पेट की उष्णता खोजता और न पाने पर रोता-चिल्लाता रहा। अंत में हमने उसे कोमल ऊन और अधबुने स्वेटर की डलिया में रख दिया, जहाँ वह माँ के सामीप्य सुख के भ्रम में सो गया। डलिया में वह ऊन की गेंद जैसा ही लगता था।

आने के समय उसे अपने साथ प्रयाग लाना पड़ा। बड़े होने पर देखा कि वह अपनी माँ के समान ही विशिष्ट है। भूटिए बाप और अल्सेशियन माँ के रूप-रंग ने उसे जो वर्णसंकरता दी थी, उसके कारण न वह अल्सेशियन था न भूटिया।

रोमों के भूरे, पीले और काले रंगों के सम्मिश्रण से जो रंग बना था, वह एक विशेष प्रकार का धूप-छाँही हो गया था। धूप पड़ने पर एक की झलक मिलती थी, छाँह में दूसरे की और दीए के उजाले में तीसरे की। कानों की चौड़ाई और नुकीलेपन में भी कुछ नवीनता थी।

सिर ऊपर की ओर अन्य कुत्ते के सिर से बड़ा और चौड़ा था और नीचे लंबोतरा पर सुडौल; पूँछ अल्सेशियन कुत्तों की पूँछ के समान सघन रोमों से युक्त पर ऊपर की ओर मुड़ी कुंडलीदार थी, पैर अल्सेशियन कुत्ते के पैरों के समान लंबे पर पंजे भूटिए के समान मज़बूत, चौड़े और मुड़े हुए नाखूनों से युक्त थे। शरीर में ऊपर का भाग भारी और चौड़ा, पर नीचे का पतले पेट के कारण हल्का और तीव्रगति का सहायक था। आँखें न काली थीं न भूरी और न कंजी थीं। उन गोल और काली कोर वाली आँखों का रंग शहद के रंग के समान था जो धूप में तरल और सुनहला हो जाता था और छाया में जमे हुए मधु सा पारदर्शी लगता था।

आकृति की विशेषता के साथ उसके बल और स्वभाव में भी विशेषता थी। ऊँची दीवार को भी वह एक छलाँग में पार कर लेता था। गले का स्वर उतना भारी, मंद और गूँजने वाला था कि रात्रि में उसका एक बार भौंकना भी वातावरण की स्तब्धता को कंपित कर देता था। अन्य कुत्तों के समान, खाने के लिए लालायित रहना, प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए पूँछ हिलाना, कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए चाटना, याचक के दीन भाव से स्वामी के पीछे-पीछे घूमना, अकारण भौंकना, काटना आदि प्रकृतिदत्त श्वान गुणों का उसमें सर्वथा अभाव था।

मैंने अनेक कुत्ते देखे और पाले हैं, किंतु कुत्ते के दैन्य से रहित और उसके लिए अलभ्य दर्प से युक्त मैंने केवल नीलू को ही देखा है। उसके प्रिय से प्रिय खाद्य को भी यदि उसे अवज्ञा के साथ फेंक कर दिया जाता तो वह उसकी ओर देखता भी नहीं था खाना तो दूर की बात है। यदि उसे किसी बात पर झिड़क दिया जाता तो बिना बहुत मनाए वह मेरे सामने ही न आता।

विगत 12 वर्षों से उसका बैठने का स्थान मेरे घर का बाहरी बरामदा ही रहा जिसकी ऊपरी सीढ़ी पर पोर्टिको के सामने बैठकर वह प्रत्येक आने जाने वाले का निरीक्षण करता रहता। मुझसे मिलने आने वालों में वह प्रायः सबको पहचानता था। किसी विशेष परिचित को आया देखकर वह सदर्प धीरे-धीरे भीतर आकर मेरे कमरे के दरवाज़े पर आकर खड़ा हो जाता। उसका इस प्रकार आना ही मेरे लिए किसी मित्र की उपस्थिति की सूचना थी। मुझसे, आ रही हूँ, सुनने के उपरांत वह पुनः बाहर अपने निश्चित स्थान पर जा बैठता। न जाने किस सहज चेतना से वह अपरिचित या असमय आने वाले व्यक्ति को जान लेता था और तब नितांल निरपेक्ष और उदासीन भाव से उसका घंटी बजाना, नौकर का आकर समाचार ले जाना आदि देखता रहता।

कुत्ते भाषा नहीं जानते पर ध्वनि पहचानते हैं। नीलू का ध्वनि-ज्ञान इतना विस्तृत और गहरा था कि उससे कुछ कहना भाषा जानने वाले मनुष्य से बात करने के समान हो जाता था। बाहर या रास्ते में घूमते हुए यदि कोई उससे कह देता- गुरुजी तुम्हें ढूँढ रही थीं नीलू तो वह विद्युतगति से चहारदीवारी कूद कर मेरे कमरे के सामने आदेश की प्रतीक्षा में खड़ा हो जाता। फिर, कोई काम नहीं है जाओ, कहने के पहले वह मूर्तिवत एक स्थिति में ही खड़ा रह जाता। कभी-कभी कार्य में व्यस्त होने के कारण मैं उसकी उपस्थिति जान ही नहीं पाती और उसे बहुत समय तक बिना हिल-डुले खड़ा रहना पड़ता।

हिंसक और क्रोधी भूटिए बाप और आखेटप्रिय अल्सेशियन माँ से जन्म पाकर भी उसमें हिंसा प्रवृत्ति का कोई चिह्न नहीं था। 13 वर्ष के दीर्घ जीवन में भी उसे किसी पशु-पक्षी पर झपटते या मारते नहीं देखा गया। उसका यह स्वभाव मेरे लिए ही नहीं, सब देखने वालों के लिए आश्चर्य की घटना थी।

मेरे बंगले के रोशनदानों में प्रायः गौरइया तिनकों से घोंसला बना लेती है। मुझे उनके परिश्रमपूर्वक बनाए हुए घोंसले उजाड़ना अच्छा नहीं लगता, अतः कालांतर में उनमें अंडों और पक्षि-शावकों की सृष्टि बस जाती है। कुछ-कुछ अंकुर जैसे पंख निकलते ही वे पक्षि-शावक उड़ने के असफल प्रयास में रोशनदानों के नीचे गिरने लगते हैं। इन दिनों नीलू उनके सतर्क पहरेदार का कर्तव्य सँभाल लेता था। उसके भय से कोई भी अन्य कुत्ता-बिल्ली उन नादान उड़ने-गिरने वालों को हानि पहुँचाने का साहस नहीं कर पाता था। कभी-कभी बहुत छोटे पक्षि-शावकों को पुनः घोंसले में रखवाने के लिए वह उन्हें होले से मुख में दबा कर मेरे पास ले आता था। जब तक रोशनदान में सीढ़ी लगवाकर मैं उस बच्चे को घोंसले में पहुँचाने की व्यवस्था न कर लेती तब तक वह या तो बड़ी कोमलता से उसे मुँह में दबाए खड़ा रहता या मेरे हाथ में देकर प्रतीक्षा की मुद्रा में देखता रहता। सवेरे नियमानुसार जब मैं मोर, खरगोश आदि को दाना देने निकलती तब वह, चाहे जाड़ा हो चाहे बरसात, मुझे दरवाज़े पर ही मिलता और मेरे साथ-साथ घूमता। पक्षियों के कक्ष में दो फुट ऊँची दीवार पर जाली लगी हुई है। नीलू दीवार पर दोनों पंजे रखकर खड़ा हो जाता और अपनी गोल आँखें घुमा-घुमा कर मानो प्रत्येक कक्ष और उसमें रहने वालों का निरीक्षण-परीक्षण करता रहता। उसके इस नियम में कभी व्यतिक्रम नहीं पड़ा।

उसका रात का कर्तव्य भी स्वेच्छा–स्वीकृत और निश्चित था। सबके सो जाने पर वह, गर्मियों में बाहर लॉन में और सर्दियों में बरामदे में तख़्त पर बैठकर पहरेदारी का कार्य करता। रात में कई–कई बार वह पूरे कंपाउंड का और पशु–पक्षियों के घर का चक्कर लगाता रहता। रात चाहे उजाली हो या अँधेरी चाहे बादल गरज रहे हों, चाहे आँधी चल रही हो, उसके चक्कर को विराम नहीं था। रात के सन्नाटे में उसके मंद, गंभीर स्वर से हम अनुमान लगा पाते थे कि वह किस कोने में पहरा दे रहा है।

खरगोश धरती के भीतर–भीतर सुरंग जैसे लंबे और दोनों ओर द्वार वाले बिल खोद लेते हैं। एक रात मेरे खरगोश बिल खोदते–खोदते पड़ोस के दूसरे कंपाउंड में जा निकले और उनमें से कई जो इस अभियान में अगुआ थे जंगली बिल्ले द्वारा क्षत–विक्षत कर दिए गए। सुरंग से बाहर आने वालों का जो हाल होता है उससे भीतर रहने वाले अनजान रहते हैं, अतः एक के पीछे एक निकलते हुए खरगोशों में से सभी को मार्जारी या शृगाल का आहार बन जाना पड़ता। किंतु उनके सौभाग्य से पहरे के नित्य क्रम में घूमते हुए नीलू ने संभवतः पत्तियों की सरसराहट से सजग होकर चहारदीवारी के पार देखा होगा और शीत की कुहराछन्न रात की मलिन चाँदनी में भी उसने खरगोशों के संकट को पहचान लिया होगा। उसके कूद कर दूसरी ओर पहुँचते ही बिल्ला तो भाग गया, परंतु खरगोशों को बाहर निकलने से रोकने के लिए वह रात भर ओस में भीगता हुआ सुरंग के द्वार पर खड़ा रहा।

यह परोपकार नीलू के लिए बहुत महँगा पड़ा, क्योंकि उसे सर्दी लगने से न्यूमोनिया हो गया और कई दिनों तक इंजेक्शन, दवा आदि का कष्ट झेलना पड़ा। वैसे वह शांत–भाव से कड़वी दवा भी पी लेता था और सुई भी लगवा लेता था।

एक बार जब मोटर दुर्घटना में आहत होकर मुझे मार्ग से ही अस्पताल जाना पड़ा, तब संध्या तक मेरी प्रतीक्षा करके और कपड़े, चादर, कंबल आदि सामान अस्पताल ले जाने वालों की हड़बड़ी देखकर उसकी सहज चेतना ने किसी अनिष्ट का आभास पा लिया। जो भी उस संध्या को मेरे बंगले पर पहुँचा वह नीलू की विषादमयी निश्चेष्ट मुद्रा देखकर विस्मित हुए बिना नहीं रहा।

जब तीन दिनों तक उसने न कुछ खाया न पिया तब डॉक्टर से अनुमति लेकर उसे अस्पताल लाया गया। पट्टियों के घटाटोप में मुझे अच्छी तरह देखने के लिए वह पलंग के चारों ओर घूमने लगा और फिर आश्वस्त होकर प्रहरी की चिर-परिचित मुद्रा में मेरे पलँग के नीचे जा बैठा। तब से हर दूसरे दिन अस्पताल न ले जाने पर वह अनशन आरंभ कर देता। इस प्रकार अस्पताल में भी वह नियमित रूप से मिलने आने वालों में गिना जाने लगा और डॉक्टर, नर्सें सब उससे परिचित हो गए।

नीलू को 14 वर्ष का जीवन मिला था और जन्म से मृत्यु के क्षण तक वह मेरे पास ही रहा, अतः उससे संबद्ध घटनाओं और संस्मरणों की संख्या बहुत अधिक है। कुत्तों में वह केवल कजली के सामीप्य से ही प्रसन्न रहता था, परंतु कजली और बादल एक क्षण के लिए एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते थे। परिणामतः नीलू बेचारा एकाकी ही रहा।

जीवन के समान उसकी मृत्यु भी दैन्य से रहित थी। 'कुत्ते की मौत मरना' कहावत है, परंतु यदि नीलू के समान शांत निर्लिप्त भाव से कोई मृत्यु का सामना कर सके तो ऐसी मृत्यु मनुष्य को भी काम्य होगी। मेरे पास अनेक जीव-जंतु हैं, परंतु जिसके बुरा मान जाने की मुझे चिंता हो, ऐसा अब कोई नहीं है।

शब्दार्थ

आभास	–	संकेत
पीताभ रोम	–	पीले रोएँ
सजग	–	जागरूक
राजसी	–	राजाओं जैसी शान
स्वच्छंद	–	स्वतंत्र, मुक्त
साहचर्य	–	साथ

पगडंडी	–	कच्चा सँकरा रास्ता
भित्तियाँ	–	दीवारें
अस्तित्व	–	वजूद
अंतराल	–	समय
अंगोछा	–	देशी तौलिया
व्यवधान	–	रुकावट
अवज्ञा	–	कहना न मानना, अवमानना
झिड़कना	–	डाँटना
रोशनदान	–	Ventilater
स्वेच्छा	–	अपनी मर्ज़ी से
निश्चेष्ट मुद्रा	–	स्थिर स्थिति
आश्वस्त	–	संतुष्ट
निर्लिप्त	–	उदासीन
विस्मित	–	आश्चर्यचकित
रक्षणीय	–	बचाने के लायक
निर्जीव	–	जीवन रहित
तुषार	–	पाला
कुंठित	–	निराश, तनावग्रस्त
अनायास	–	अचानक

सामीप्य	–	निकटता
सम्मिश्रण	–	मिलावट
पारदर्शी	–	आर–पार दिखाई देने वाला
लालायित	–	इच्छुक
स्तब्धता	–	खामोशी
अलभ्य	–	दुर्लभ
दर्प	–	घमंड

प्रश्न:–

1. लूसी सामान्य कुत्तों से क्यों भिन्न थी?
2. अल्सैशियन कुत्तों की सबसे बड़ी विशेषता क्या होती है?
3. लूसी किस तरह उत्तरायण के लोगों की मदद करती थी?
4. कुत्ते लकड़बग्घे के अनायास आहार कैसे बन जाते हैं?
5. नीलू की किन्हीं दो विशेषताओं के बारे में लिखिए।
6. नीलू को कितने वर्ष का जीवन मिला था और वह किसके पास रहता था?
7. निम्नलिखित पंक्तियों के प्रसंग सहित भाव स्पष्ट करें।

   (क) गले में कपड़ा बाँधते ही वह तीर की तरह दुकान की दिशा में चल देती।

   (ख) उसका इस प्रकार आना ही मेरे लिए किसी मित्र की उपस्थिति की सूचना थी।

   (ग) जीवन के समान उसकी मृत्यु भी दैन्य से रहित थी।

पाठ – 8

यशोधरा

– मैथिलीशरण गुप्त

(मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के लोकप्रिय कवि थे। हिंदी साहित्य जगत में आप राष्ट्रकवि के रूप में सम्मानित थे। राष्ट्रीय, समाजसुधार की भावना, भारत के अतीत गौरव का चित्रण, सांस्कृतिक जागरण, नैतिकता आदि उनके काव्य की प्रमुख विशेषताएँ थीं। उनकी अधिकांश रचनाएँ ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों पर आधारित हैं। खड़ी बोली के स्वरूप निर्धारण एवं विकास में आपका विशेष योगदान है।

राष्ट्र की आत्मा को वाणी देने के कारण आप राष्ट्रकवि कहलाए और आधुनिक हिंदी काव्य–धारा के साथ विकास पथ पर चलते हुए युग प्रतिनिधि कवि स्वीकार किए गए। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ–साकेत, यशोधरा, नहुष और कुणाल हैं।)

सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ–बाधा ही पाते ?

मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर भी क्या पूरा पहचाना ?
मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते।

सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में–
क्षात्र–धर्म के नाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा ?
जिसने अपनाया था, त्यागा,
रहें स्मरण ही आते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते ?
गए तरस ही खाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
जाएँ, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुःखी न हों इस जन के दुःख से,
उपालंभ दूँ मैं किस मुख से ?

आज अधिक वे भाते!

सखि, वे मुझसे कहकर जाते,

गए, लौट भी वे आवेंगे।

कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे,

रोते प्राण उन्हें पावेंगे,

पर क्या गाते-गाते ?

सखि, वे मुझसे कहकर जाते,

शब्दार्थ

पथ-बाधा	–	रास्ते की परेशानी
सुसज्जित	–	सजा हुआ
नयन	–	आँख
गर्व	–	घमंड
निष्ठुर	–	कठोर, दयाहीन
अनुपम	–	अनोखा
उपालंभ	–	उलाहना, शिकायत
विफल	–	बेकार

प्रश्नः–

1. यशोधरा क्यों दुःखी है?

2. यशोघरा के पति कौन थे और वे कहाँ चले गए थे?

3. यदि वे कहकर जाते तो यशोधरा क्या करती?

4. उसके पति क्या लेकर वापस लौटेंगे?

5. यशोधरा अपने पति के लिए किस बात की कामना करती है?

6. निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ लिखिए–

   (क) मुझको बहुत उन्होंने माना, फिर भी क्या पूरा पहचाना?

   (ख) हमीं भेज देती हैं रण में क्षात्र धर्म के नाते।

   (ग) सदय हृदय वे कैसे सहते? गए तरस ही खाते!

   (घ) उपालंभ दूँ मैं किस मुख से? आज अधिक वे भाते!

पाठ–9

बाबू जी बारात में

– विष्णु प्रभाकर

(विष्णु प्रभाकर जी आधुनिक हिंदी साहित्य के महान लेखक हैं। आपके द्‌वारा साहित्य की विविध विधाओं में उच्चस्तरीय लेखन कार्य किया गया है। प्रभाकर जी की रचनाओं में यथार्थ भावभूमि, आदर्श और स्वाभाविकता के दर्शन होते हैं। आपके निबंधों में सर्वत्र रोचकता व संवेदनशीलता विद्‌यमान है। स्केच और संस्मरण के क्षेत्र में विष्णु जी को अपार प्रसिद्‌धि मिली। जीवन के साधारण स्तरों पर व्यवहृत अनुभूतियों के मार्मिक क्षणों को अभिव्यक्त करने में उनकी कुशलता देखते ही बनती है। आपकी प्रसिद्‌ध रचनाएँ – 'आदि और अंत', 'संघर्ष के बाद', 'ढलती रात', 'नवप्रभात', जाने अनजाने आदि।)

बाबू गजनंदन लाल पुरानी दिल्ली के एक पुराने मोहल्ले में रहते थे। वज़न उनका बहुत भारी नहीं था, कुल दो मन बीस सेर के थे। लेकिन इतना तेज़ चलते थे कि लोग उन्हें देख पाएँ, इसी बीच में धमकचाल से चलते हुए वह दूर निकल जाते थे। कॉलेज में पढ़ाते थे। लेकिन बस में बैठे उन्हें कभी किसी ने नहीं देखा। बात यह थी कि जब शुरू–शुरू में नई बसें आईं, तब उनके दरवाज़े कुछ तंग थे। बाबू गजनंदन लाल दरवाज़े में फँस गए। ऊपर से कंडक्टर चीख़ रहा है, नीचे से चढ़ने वाले चिल्ला रहे हैं, पर बाबू गजनंदन हैं कि हँसे जा रहे हैं। काफ़ी ज़ोर लगाने के बाद बोले–"देखो भाई शोर मत मचाओ। कहीं मेरा बैलेंस बिगड़ गया तो बस उलट जाएगी।"

फिर तो वह ठहाका लगा कि बस सचमुच उलटते–उलटते बची। अच्छा यही हुआ कि

उस झटके के साथ बाबू गजनंदन लाल नीचे जा गिरे। उन्होंने वहीं पर कान पकड़े "मैं अब कभी बस में नहीं चढूँगा। देखो तो कैसा पिचक गया हूँ।"

एक बार ऐसा हुआ कि उन्हें अपने एक मित्र के लड़के की बारात में जाना पड़ा। बारात काफ़ी दूर जा रही थी, इसलिए वर के पिता ने एक नई बस किराए पर ली। बाबू गजनंदन का ख़्याल करते हुए उन्होंने यह भी देख लिया कि बस का दरवाज़ा काफ़ी चौड़ा है। बाबू गजनंदन बहुत ख़ुश हुए। बोले "आप बहुत चतुर हैं। जानते हैं कि मेरे कारण बारात में खूब मज़ा रहेगा, इसलिए मेरा बड़ा ध्यान रखते हैं।"

और सचमुच जिस घड़ी बाबू गजनंदन लाल पधारे, उसी घड़ी से ठहाके लगने शुरू हो गए लेकिन बाबू गजनंदन कुछ उदास दिखाई दे रहे थे। एक मित्र ने पूछा "बाबू जी, बारात में जाते समय आप उदास क्यों हो गए"?

बाबू जी ने उत्तर दिया "क्या बताएँ भाई, सबेरे जब चलने लगा, तब माँ बोली–"बेटा, तुझे हो क्या गया है। दिन पर दिन सूखता जा रहा है, ख़ुराक घट रही है। यहाँ तो मैं तेरा ध्यान रखती हूँ, बारात में तेरी देखभाल कौन करेगा? सो, बेटा, तू संकोच मत करियो, खूब खइयो।"

यह कहकर बाबू गजनंदनलाल थोड़ा मुस्कुराए और बोले–"बेचारी माँ, उसे क्या पता कि मैं बारात में जाने के लिए एक सप्ताह से आधे दिन का उपवास कर रहा हूँ। भला सोचो, लड़की वाले का ख़्याल भी तो रखना है। बेचारा बड़े चाव से तरह–तरह के पकवान और मिठाइयाँ बनवाएगा। तुम आजकल के छोकरे, मिठाई से तुम्हें सख़्त परहेज़ है। पकवान खाने से तुम्हारे पेट में दर्द हो जाता है। मैं तुम्हारी मदद करने के लिए ही तो जा रहा हूँ। जब लौटूँगा, तब माँ देखकर बहुत ख़ुश होगी। समझ जाएगी कि उसका बेटा भोला नहीं है।"

उनकी बातें सुनकर बराती खूब हँसे, इतने कि तोंद नाचने लगी। तभी अचानक क्या हुआ कि बस एक झटके के साथ रुक गई। पहले तो कोई कुछ नहीं बोला, फिर सब बाहर झाँकने लगे। चारों ओर हरे–भरे खेत थे और सामने एक छोटा–सा रेलवे स्टेशन नज़र आ रहा था। उन्होंने समझा कि शायद यहाँ से कोई बराती चढ़ने वाला है। लेकिन तभी ड्राइवर ने आकर कहा "आप सब लोग नीचे उतर जाएँ। पहिए में पंचर हो गया है। सुधारने में कुछ देर लगेगी।"

लो सिर मुड़ाते ही ओले पड़े। आखिर हुआ क्या, नई बस है। कैसा ख़राब ज़माना आ गया है। लोग बेईमान हो गए हैं। नए टायर भी इतने रद्दी!

इसी तरह की बातें करते हुए बराती धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे और जब उन्होंने बाबू गजनंदनलाल को धमकचाल से नीचे उतरते हुए देखा, तो कोरस में अट्टहास करते चिल्ला उठे- ''हम भी कहें कि नई बस क्यों बिगड़ी, यह हाथी का बच्चा इसमें सवार जो था।''

बाबू गजनंदन भी जोर से हँसे, इतने की तोंद बिलबिला उठी। बोले- ''तुम लोग समझदार मालूम होते हो। मेरा नाम गजनंदन है और इसका मतलब होता है हाथी का बच्चा।''

आखिर बस ठीक हो गई और हँसते खिलखिलाते बरात जनवासे तक सकुशल पहुँच गई। वहाँ खूब स्वागत-सत्कार हुआ। जिसे देखो वही बाबू गजनंदनलाल की ओर माला लिए बढ़ा आ रहा है। वर यह देखकर उदास हो गया। अपने साथी से बोला- ''पिताजी ने बाबू गजनंदन को साथ लाकर बड़ी गलती की। सब लोग उन्हीं की ओर देखते हैं, मेरी ओर कोई नहीं देखता।''

जब नाश्ते का बुलावा आया, तब भी वही सबसे आगे थे और जीमते समय भी सबसे बीच में गणेश जी की तरह डटकर बैठ गए। हर शुभ कार्य में सबसे पहले गणेश जी की पूजा होती है, सो कन्यापक्ष के लोग सबसे पहले उन्हीं की ओर आते। बराती बार-बार कहते- ''नहीं, इतना नहीं परोसो, राशन का ज़माना है।''

बारात धूम-धाम से चढ़ी। अपनी चिर-परिचित तंग मोहरी की पतलून पहने बाबू गजनंदनलाल आगे-आगे थे। अंग्रेज़ी बाजे को देखकर लोग इतने खुश नहीं हुए, जितने उनकी थिरकती हुई तोंद को देखकर। सब हँसते-हँसते दोहरे होने लगे। इसी हँसी में विवाह के सब काम पूरे होने लगे। फेरे भी पूरे हो गए, पर तभी वहाँ पर कुछ परेशानी नज़र आई। बाबू गजनंदन लाल ने पूछा- ''क्यों भाई, क्या बात है ?''

वर के भाई ने कहा- ''कोई ख़ास बात नहीं चाचा जी, फ़ोटोग्राफ़र वर-वधु का फ़ोटो खींचना चाहता है। वह चाहता है कि बहू ज़रा हँसे। लेकिन वह सिर नीचा किए बैठी है, मुँह ऊपर उठाती नहीं।''

बाबू गजनंदन लाल बोले–"अरे तो इसमें क्या बात है, आओ मेरे साथ।"

और धमकचाल से दौड़ते हुए वह मंडप में आ खड़े हुए। देखा कि सभी लोग बहू से प्रार्थना कर रहे हैं "बेटी, ज़रा हँस दो। बस एक बार ज़रा मुस्करा दो।"

बाबू गजनंदन लाल हाँफ़ते हुए एकाएक बोल उठे– "ना ना बेटी, हँसना मत, मोती झर जाएँगे। बस, तुम ज़रा एक बार मेरी ओर देख लो।"

नई आवाज़ थी और नई बात भी। बहू ने एकाएक सिर उठाकर जो उनको देखा, तो जैसे धूप खिल उठी। वह हँस पड़ी, उसी क्षण फ़ोटोग्राफ़र ने एक–एक करके कई चित्र उतार लिए। फिर उनकी ओर मुड़कर कहा– "बाबू साहब, जो कोई नहीं कर सका, वह आपने कर दिखाया। बहुत–बहुत शुक्रिया।"

बाबू गजनंदन लाल सहसा कठोर होकर बोले– "वाह, जनाब, यह भी खूब रही। शुक्रिया से मेरी भूख मिटने वाली नहीं है। अभी एक सुंदर सा फ़ोटो मेरा भी उतारो। माँ को जाकर दिखाना होगा कि मैंने अपना कितना ध्यान रखा है।"

और फिर उस अट्टहास के बीच वह फ़ोटो खिंचवाकर ही वहाँ से हटे। आज भी वह फ़ोटो उनके कमरे में लगा हुआ है। मोटे–मोटे अक्षरों में उस पर लिखा हुआ है– बाबू गजनंदन लाल बरात में।

शब्दार्थ

परहेज़	–	बचाव, avoidance
ठहाका	–	ज़ोर की हँसी
खुराक	–	मात्रा
चाव	–	रुचि

वर	–	दूल्हा
ख़्याल	–	विचार
उपवास	–	व्रत
चिरपरिचित	–	जाना पहचाना

प्रश्नः–

1. बाबू गजनंदन लाल कहाँ रहते थे? उनका वज़न कितना था?
2. बारात में जाते वक्त माँ ने बाबूजी को क्या समझाया?
3. बारात में जाने से पहले बाबूजी ने क्या तैयारी की थी?
4. लोग हँसते-हँसते दोहरे क्यों हो गए?
5. बाबू गजनंदन लाल की तोंद क्यों बिलबिला उठी?
6. जनवासे में वर क्यों दुःखी था?
7. हर शुभ कार्य में सबसे पहले किसकी पूजा होती है?
8. बाबू गजनंदन ने सबसे महत्वपूर्ण कार्य कौन सा किया था?
9. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ स्पष्ट कर उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

   सिर मुड़ाते ओले पड़ना

   मोती झरना

   धूप खिलना

पाठ 10

पुष्प की अभिलाषा

– पं. माखन लाल चतुर्वेदी

(माखन लाल चतुर्वेदी जी स्वतंत्रता आंदोलन के महान कवि हैं। उनकी राष्ट्रीय कविताओं में देश प्रेम की उत्कृष्ट भावना व्याप्त है। राष्ट्रीयता उनके काव्य का कलेवर है तो भक्ति उसकी आत्मा। वे एक सजग, संवेदनशील एवं उत्साही व्यक्ति थे और आरंभ से ही देश की दशा के प्रति जागरूक थे। इन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा देशवासियों को इसी संघर्ष और साधना के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इनके प्रमुख कविता-संग्रह हैं – हिमकिरीटिनी और हिमतरंगिनी।)

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी–माला में
बिंध, प्यारी को ललचाऊँ॥
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर, 'हे हरि!' डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ॥

मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएँ वीर अनेक॥

शब्दार्थ

सुर बाला	–	देवकन्या
पथ	–	रास्ता
गूँथा	–	पिरोया
मातृभूमि	–	अपना देश
शव	–	मृत शरीर
सम्राट	–	राजा
हरि	–	भगवान

प्रश्नः–

1. पुष्प वनमाली से क्या निवेदन करता है?

2. पुष्प को किस–किस चीज़ की चाह नहीं है?

3. निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ बताइए–

(क) चाह नहीं, प्रेमी–माला में बिंध, प्यारी को ललचाऊँ॥

(ख) मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक॥

पाठ 11

जुलूस

– कणाद ऋषि भटनागर

(श्री कणाद ऋषि भटनागर मुख्य रूप से नाट्यकार हैं। साहित्यिक दृष्टि से उन्होंने हास्यविनोद प्रधान और व्यंग प्रधान नाट्य रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। उनकी रचनाओं का सांस्कृतिक पक्ष भी सजग है। राजनीतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार, विदेशी आक्रमण और राष्ट्रीय सुरक्षा,सामाजिक और नैतिक स्वच्छता की ओर उनकी रचनाएँ हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। उनकी भाषा संदर्भ के अनुरूप बोलचाल की अनौपचारिक भाषा है। उनके कुछ लोकप्रिय एकांकी हैं:– हड़ताल, सफ़र के साथी, लांछन, आज का ताज़ा अख़बार, जुलूस। 'जुलूस' एकांकी में समाज के राजनीतिक जीवन में फैले हुए भ्रष्टाचार का पर्दाफ़ाश किया गया है। इस एकांकी में भाड़े के लोगों की सहायता से जुलूस का आयोजन एक सामाजिक यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें विनोद तत्व का भी समावेश हुआ है।)

पात्र

श्यामलाल	:	एक राजनैतिक नेता
बुद्धू	:	श्यामलाल का नौकर
चमनलाल	:	विस्थापितों का प्रतिनिधि

(एक सजा हुआ ड्राइंग रूम। श्यामलाल एक अख़बार पढ़ रहा है। बुद्धू कमरा साफ़ कर रहा है। बाहर दरवाज़े पर खटखटाहट होती है। बुद्धू दरवाज़ा खोलता है। बाहर से चमनलाल प्रवेश करता है।)

श्याम : आइए। तशरीफ़ रखिए। माफ़ कीजिए, मैंने आपको पहचाना नहीं।

चमन : आप सही कहते हैं। मुझे चमनलाल कहते हैं। मुझे आपने पहले कभी नहीं देखा होगा। मगर जनाब हम तो रोज़ आपको देखते हैं। कल शाम को परेड ग्राउंड में आपका लेक्चर सुना था। बड़ा जोशीला था। क्या बात थी! ऐसा बोलने वाला अभी तक नहीं देखा।

श्याम : आप तशरीफ़ रखिए न!

चमन : (बैठकर) आपकी एक-एक बात चुन-चुन कर कही गई थी। मुल्क की तरक्की का जो खाका आपने खींचा था, उसका जवाब नहीं।

श्याम : हम तो असलियत कहते हैं। इसलिए पब्लिक को हमारी बातें अच्छी लगती हैं।

चमन : अजी साहब, अच्छी क्यों न लगें। उनमें वज़न है, वो सच्ची हैं।

श्याम : शुक्रिया। हम हमेशा कोशिश करेंगे कि पब्लिक की सेवा करते रहें।

चमन : तभी तो आपके पास भागा आया हूँ। आपके सिवाय हमें नई मुसीबत से कौन छुटकारा दिलवाएगा।

श्याम : आप किस मुसीबत में हैं? फ़रमाइए, क्या कष्ट है?

चमन : अजी इस ज़माने में कष्टों की कोई हद है? एक हो तो आदमी बताए। मगर हुज़ूर को हम ज़्यादा परेशान नहीं करेंगे। सिर्फ़ एक कष्ट के लिए आपको कुछ करना पड़ेगा।

श्याम : फ़रमाइए।

चमन : किस्सा सिर्फ यह है कि जगह न मिलने की वजह से हमने कुछ सरकारी

ज़मीन पर अपने खोखे डलवा दिए थे। जगह मेन रोड पर थी। सरकारी नोटिसों की हमने परवाह नहीं की । और बताइए भी हुज़ूर, हम उन्हें छोड़ कैसे सकते थे? फिर सरकार ने हमें एक नई कालोनी में बसाने का फ़ैसला किया मगर वह जगह वहाँ से आठ मील दूर है। अब बताइए, हम वहाँ कैसे जा सकते थे? हमारा तो सारा बिजनिस ही ठप्प हो जाता। हमने वहाँ से न हटने का पक्का फ़ैसला कर लिया। मगर जनाब, अब आप सुनिए सरकार की मनमानी। परसों सुबह-सुबह पुलिस का एक पूरा दस्ता आ गया और उन्होंने एकदम खोखे तोड़ डाले। बताइए, यह क्या नेशनल गवरमेंट को शोभा देता है? क्या यह हमारा मुल्क नहीं है? बताइए, है न पूरी ज़्यादती? बताइए न!

श्याम : बिल्कुल। यह तो बड़ी बेजा हरकत है।

चमन : यह बात हुई न। मुझे मालूम था आप हमारी कठिनाई को जल्दी समझ जाएँगे। कल से सैकड़ों नेताओं के पास चक्कर लगा चुके हैं मगर उन लोगों को लीडरी का नशा है। वो भला ग़रीबों की क्यों सुनें। अब आप हमारे लिए ज़रूर कुछ कीजिए। ऐसा शोर मचाइए कि एक दफ़ा तो गवरमेंट को भी पिस्सू पड़ने लगें। भाषण दीजिए, सत्याग्रह करवाइए, हड़ताल की अपीलें कीजिए, धरना लगाइए, आखिर पब्लिक का मामला है, कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। हाँ, जनाब।

श्याम : मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ। इस ज़ुल्म के बारे में कुछ करना ही पड़ेगा। सरकार ने आखिर जनता को समझ क्या रखा है? जब तक आप आवाज़ नहीं उठाएँगें, इन लोगों के कान में जूँ तक नहीं रेंगेगी।

चमन : आपने सही फ़रमाया है। मगर हुज़ूर हम ग़रीबों की सुनता कौन है, मानो नक्कारेख़ाने में तूती की आवाज़। इस काम का पुण्य तो आपको ही उठाना है।

श्याम : ज़रूर, ज़रूर

चमन : तो फिर हमारा काम कब शुरू कर रहे हैं?

श्याम : (सोचते हुए) मेरे ख़्याल में आपके केस को एक जुलूस और दो पब्लिक मीटिंगों से शुरू करना चाहिए।

चमन : यह तो बहुत अच्छा रहेगा।

श्याम : आप जुलूस कितना बड़ा चाहते हैं?

चमन : कम से कम एक मील लंबा तो होना चाहिए।

बुद्धू : तो इसका मतलब यह हुआ कि कम से कम दो हज़ार आदमी चाहिए।

श्याम : बुद्धू!

बुद्धू : छोटे सरकार, मुझे यह सारी बातें मुँहजबानी याद हैं। कई जुलूस निकलवा चुके हैं हम लोग।

चमन : मेरे ख़्याल से एक मील लंबा काफ़ी होगा।

बुद्धू : औरतें कितनी चाहिए?

चमन : जी?

श्याम : इससे जुलूस में कलर आ जाता है। औरतों से पब्लिक पर ज़्यादा असर पड़ता है। आजकल एडवरटाइज़मेंट का ज़माना है, सेक्स के प्रभाव का पूरा लाभ उठाना चाहिए। तीस चालीस औरतें जुलूस में आगे और दस–पंद्रह पीछे होनी चाहिए।

बुद्धू : आपके आदमियों में से कितने मर्द और औरतें जुलूस में हिस्सा लेंगे।

चमन : हमारे लोग ज़्यादातर नौकरी-पेशा तथा बिजनिस में हैं, काम से छुट्टी लेना मुश्किल हो जाएगा। औरतें तो शायद बिल्कुल न आ सकें।

श्याम : ख़ैर आपके आदमी नहीं आ सकते तो कोई बात नहीं। हम सब इंतज़ाम ख़ुद कर लेंगे मगर आपको ख़र्चा ज़्यादा पड़ेगा।

चमन : ख़र्चा?

श्याम : हमारे पास मुश्किल से दो तीन सौ वर्कर्ज़ हैं।

बुद्धू : बाकी हमें किराए पर लाने पड़ेंगे। दो घंटे के लिए एक आदमी कम से कम छः रुपए माँगता है मगर क्योंकि हमें अक्सर इन लोगों की ज़रूरत पड़ती है तो हमारे लिए कंसेश्नल रेट पाँच रुपए का है। अलबत्ता, औरतों को छः रुपए ही देने पड़ते हैं। बूढ़ी औरतों की दर सात रुपए है।

चमन : बूढ़ी औरतें?

श्याम : दो-चार बूढ़ी औरतें तो रखनी पड़ती हैं।

बुद्धू : और फिर इश्तहार निकालने होंगे। झंडे और बिल्ले वगैरह बनवाने पड़ेंगे। फ़ोटोग्राफ़र लाए जाएँगे और अगर आप जुलूस साइकिलों पर चाहते हैं तो दो रुपए फ़ी आदमी अलग से लगेंगे।

चमन : इसमें तो बहुत ख़र्चा पड़ेगा।

श्याम : इतना ज़्यादा नहीं। हम अपने वर्कर्ज़ फ़्री दे देंगे।

बुद्धू : बस उनकी चाय-पानी का ख़र्चा उठा देना।

श्याम : (हिसाब लगाकर) मेरे ख्याल में पाँच हज़ार में सब ठीक हो जाएगा। एक मील लंबा जुलूस कनाट प्लेस से शुरू होकर बोट मैदान पर धरना जमा देगा। हर पचास आदमियों के ग्रुप के हाथ में झंडे होंगे।

बुद्धू : आगे झंडे पकड़े चुनी हुई ख़ूबसूरत लड़कियाँ।

श्याम : उनके पीछे दो पैंसठ–सत्तर साल की बूढ़ी औरतें, उनके पीछे हमारे वर्कर्ज़।

बुद्धू : बाकी जुलूस में किराए के आदमी। सबसे पीछे फिर औरतें, तीस–पैंतीस साल के बीच की उम्र वाली, मगर नैन नक्श ख़ूबसूरत। जुलूस के बीच वाली औरतों की 'गोदियों' में बच्चे।

श्याम : हर ग्रुप की साइड में दो–दो वालंटियर, जोश देने और नारे लगाने के लिए। तीन चार इंचार्ज हमें बाहर से भी बुलाने पड़ेंगे, जुलूस को प्रभावशाली बनाने के लिए।

बुद्धू : उनके आने–जाने और रहने का ख़र्च भी देना पड़ेगा।

श्याम : और एक बात जो मैं बिल्कुल भूल गया था।

चमन : कौन सी बात?

श्याम : एक हजार रुपए का ख़र्चा और एक जाने–माने पब्लिक लीडर की हाज़िरी।

चमन : वह कैसे?

श्याम : हम इसका भी इंतज़ाम कर सकते हैं। एक तो उनके आने से सरकार को पुलिस वग़ैरह का ज़्यादा इंतज़ाम करना पड़ेगा। ज़्यादा पुलिस की वजह से जुलूस की इंपार्टेंस बढ़ जाती है। और जब वह वोट क्लब के मैदान पर लाकर प्रदर्शन करने वालों को लेक्चर देंगे तो बड़ों–बड़ों का ध्यान भी उधर खिंचेगा। हो सकता है इस प्रदर्शन से पार्लियामेंट में कोई सवाल पूछ ले। लेक्चर देते समय कोई विदेशी फ़ोटोग्राफ़र फ़ोटो खींच सकता है।

बुद्धू : बस, सिर्फ़ एक हज़ार रुपए की बात है।

चमन : एक हज़ार तो कुछ नहीं। अगर काम हो जाए तो हम हज़ारों ख़र्च करने के लिए तैयार हैं।

श्याम : तो फिर ऐसा करो। पहले परेड ग्राउंड में एक मीटिंग का इतंज़ाम करो। दस हज़ार का ख़र्चा होगा। पाँच स्पीकर्ज़ मैं ला दूँगा। चोटी के पब्लिकमेन। ऑडियंस भी इकट्ठा कर दूँगा।

बुद्धू : नारे मैं लगवा दूँगा।

श्याम : यानी आपका केस इस होशियारी और ज़ोरदार तरीके से डिमांस्ट्रेट किया जाएगा कि पब्लिक ओपीनियन आपकी तरफ़ हो जाएगी। अगले दिन अख़बारों में आप लोगों की लेक्चर देते हुए फ़ोटुएँ छपेंगी, वर्नेकुलर पेपर्ज़ में एडिटोरियल लिखवा दूँगा। आप ज़रा ख़र्चा सँभालिए और फिर देखो हमारी शोमेनशिप।

बुद्धू : हाँ, फिर देखिए।

चमन : तो फिर ठीक है। आप ख़र्चे की बिल्कुल परवाह न कीजिए। आप सब इंतज़ाम शुरू कीजिए।

बुद्धू : तो लाइए, हाथ मिलाइए। (मगर बुद्धू श्याम से हाथ मिलाने लगता है, फिर चमन लाल से मिलाता है।)

श्याम : तो फिर लाइए एडवांस और मैं अपने वर्कर्ज़ की आज ही मीटिंग बुलवाता हूँ।

चमन : कितना एडवांस चाहिए?

बुद्धू : जितना आप दे सकें।

चमन : दो हज़ार रुपए हैं इस वक्त।

श्याम : चलेगा। कल तक और भिजवा दीजिए। हिसाब-किताब होता रहेगा। हिसाब के मामले में हम बड़े साफ़ हैं।

चमन : क्यों नहीं, यह लीजिए दो हज़ार।

श्याम : यहाँ रख दीजिए। मैं पब्लिक के पैसे को हाथ नहीं लगाता। और अपना पता भी दे जाइए।

बुद्धू : आपकी एक फ़ाइल खुल जायेगी।

चमन : जी, बहुत अच्छा। तो फिर सब ठीक हो जाएगा न?

बुद्धू : समझो, हो गया।

श्याम : आप तनिक भी न घबराइए।

चमन : जी, बहुत अच्छा। आप पर ही हमारी उम्मीद है। अच्छा नमस्ते।

श्याम : नमस्ते।

बुद्धू : हमारी भी नमस्ते।

(पटाक्षेप)

शब्दार्थ

जुलूस	–	Procession
तशरीफ़ रखना	–	बैठना
ज़्यादती	–	अन्याय
वज़न	–	बल

हुज़ूर	–	महोदय
दस्ता	–	दल
बेजा हरकत	–	अनुचित कार्य
सत्याग्रह	–	passive resistance
हड़ताल	–	strike
धरना	–	picketing
मुँह जबानी	–	orally
इश्तहार	–	विज्ञापन
बिल्ले	–	badge
नारे	–	slogans
ज़ोरदार	–	प्रभावशाली
मुल्क	–	देश
तरक्की	–	उन्नति
ख़ाका	–	चित्र
असलियत	–	वास्तविकता
फ़रमाइए	–	कहिए
खोखे	–	लकड़ी से बनी छोटी दुकान

फ़ैसला	–	निश्चय
नैन–नक्श	–	चेहरे की बनावट

प्रश्न :–

1. चमन की क्या समस्या थी और श्याम ने उसका क्या हल सुझाया?

2. जुलूस के बारे में मुख्य–मुख्य बातें बताइए।

3. जुलूस एकांकी के मुख्य पात्र चमनलाल का चरित्र–चित्रण लिखिए।

4. जुलूस एकांकी का सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

5. निम्नलिखित शीर्षकों में एकांकी की भाषा शैली का परिचय दीजिए–
छोटे वाक्य, अंग्रेज़ी शब्द, हिंदी – उर्दू शब्दावली, मुहावरे, कहावतें।

पाठ – 12

पीपल के पीले पत्ते

– नागार्जुन

(प्रगतिवादी काव्य के उद्‌भव व विकास में नागार्जुन जी का योगदान विशेष महत्व रखता है। कवि के साथ-साथ ये हिंदी के प्रमुख उपन्यासकार भी हैं। इनकी कविताएँ गंभीर संवेदनात्मक और कलात्मक हैं जिनमें कवि ने मानव मन की रागात्मक और सौंदर्यमयी छवियों को अंकित किया है और साथ ही साथ मनुष्य की मानवीय संभावनाओं के प्रति आस्था व्यक्त की है। दूसरी कोटि की कविताएँ वे हैं जो सामाजिक कुरूपता, राजनीतिक अव्यवस्था और धार्मिक अंधविश्वास पर बढ़िया चुभता हुआ व्यंग्य करती हैं। तीसरी कोटि की रचनाएँ उद्‌बोधनात्मक हैं।)

खड़-खड़-खड़-खड़ करने वाले
ओ पीपल के पीले पत्ते!
अब न तुम्हारा रहा ज़माना
शक्ल पुरानी रंग पुराना
सीख पुरानी ढंग पुराना
अब न तुम्हारा रहा ज़माना
आज गिरो, कल गिरो कि परसों

तुमको तो अब गिरना ही है;
बदल गई ऋतु राह देखती, लाल-लाल पत्तों की दुनियाँ
हरे-हरे कुछ भूरे-भूरे, टूसों से लद रही टहनियाँ।
इनका स्वागत करते जाओ
ओ पीपल के पीले पत्ते! लाल गुलाबी पत्ते कैसे
लह-लह-लह-लहलहा रहे हैं,
कैसी सुंदर रात, चाँद की
किरनों में ये नहा रहे हैं
छलक रहा इनमें जीवन रस
दौड़ रही है इन पर लाली
बुनने लगे आँख खुलते ही
ये स्वर्णिम सपनों की जाली;
यह इनका युग, यह इनके दिन
रहे अंत की घड़ियाँ तुम गिन
हट जाओ, इनको अवसर दो
पूर्ण हो रही आयु तुम्हारी
तुम हलके, इनका दिल भारी,
राह रोककर खड़े न होना
झूठ-मूठ के बड़े न होना

सारा श्रेय तुम्हें ही देंगे
अपने पूर्वज की उदारता
जीवन भर ये याद रखेंगे
ओ पीपल के पीले पत्ते!

शब्दार्थ

ज़माना	–	समय
स्वर्णिम	–	सोने का
युग	–	समय
पूर्वज	–	जो हमसे पहले उत्पन्न हुए हैं
श्रेय	–	कल्याण
टूसे	–	कोंपलें, नई पत्तियाँ

प्रश्न:–

1. पीपल के पीले पत्ते द्वारा कवि ने मनुष्यों को क्या संदेश दिया है?
2. कवि की दृष्टि में पीपल के पीले पत्तों का ज़माना क्यों नहीं रहा?
3. चाँद की किरनों में कौन नहा रहे हैं?
4. ऋतु के बदलने पर टहनियाँ किससे लद गई हैं?

पाठ – 13

वापसी

– उषा प्रियंवदा

(उषा प्रियंवदा अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों में समान रूप से लिखती हैं। उन्होंने उपन्यास और कहानियाँ दोनों लिखे हैं। वे अत्यंत संवेदनशील लेखिका हैं। उनकी कहानियाँ अनुभूतिजन्य हैं। उन्होंने अपने लेखन में समाज में घट रहे सत्य को सहज-स्वाभाविक भाषा के माध्यम से पाठकों के समक्ष रखा है। आप सहज अनुभूतिजन्य होने के कारण कला का स्वाभाविक और मनोरम रूप प्रस्तुत करती हैं तथा यह कलापूर्ण सहजता ही उनकी कहानियों को हृदयस्पर्शी बनाती हैं। प्रस्तुत कहानी 'वापसी' बदलती परिस्थितियों में बदलते पारिवारिक संबंधों पर आधारित है। पुरानी और नई पीढ़ी के संघर्ष, पति और पत्नी, पिता और पुत्र संबंधों की टूटन और शिथिलता इस कहानी में परिलक्षित होती है।)

गजाधर बाबू ने कमरे में जमा सामान पर एक नज़र दौड़ाई–दो बक्स, डोलची, बाल्टी–"यह डिब्बा कैसा है, गनेशी?" उन्होंने पूछा। गनेशी बिस्तर बाँधता हुआ, कुछ गर्व, कुछ दु:ख, कुछ लज्जा से बोला, "घरवाली ने साथ को कुछ बेसन के लड्डू रख दिए हैं। कहा–बाबूजी को पसंद थे, अब कहाँ हम ग़रीब लोग आपकी कुछ ख़ातिर कर पाएँगे।" घर जाने की ख़ुशी में भी गजाधर बाबू ने एक विषाद का अनुभव किया, जैसे एक परिचित स्नेह आदरमय, सहज संसार से उनका नाता टूट रहा था।

"कभी-कभी हम लोगों की भी खबर लेते रहिएगा।" गनेशी बिस्तर में रस्सी बाँधता हुआ बोला।

"कभी कुछ ज़रूरत हो तो लिखना गनेशी। इस अगहन तक बिटिया की शादी कर दो।"

गजाधर बाबू चलने को तैयार बैठे थे। रेलवे क्वार्टर का वह कमरा, जिसमें उन्होंने इतने वर्ष बिताए थे, उनका सामान हट जाने से कुरूप और नग्न लग रहा था। आँगन में रोपे पौधे भी जान-पहचान के लोग ले गए थे, और जगह-जगह, मिट्टी बिखरी हुई थी। पर पत्नी व बाल-बच्चों के साथ रहने की कल्पना में यह बिछोह एक दुर्बल लहर की तरह उठकर विलीन हो गया।

गजाधर बाबू ख़ुश थे। बहुत ख़ुश, पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रह कर काटा था। अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, बड़े लड़के अमर और लड़की कांति की शादियाँ कर दी थीं, दो लड़के ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे। गजाधर बाबू नौकरी के कारण प्रायः छोटे स्टेशनों पर रहे और उनके बच्चे और पत्नी शहर में, जिससे पढ़ाई में बाधा न हो। गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी थे। जब परिवार साथ था, ड्यूटी से लौटकर बच्चों से हँसते-बोलते, पत्नी से कुछ मनोविनोद करते-उन सबके चले जाने से उनके जीवन में गहन सूनापन भर उठा। ख़ाली क्षणों में उनसे घर में टिका न जाता। कवि प्रकृति के न होने पर भी उन्हें पत्नी की स्नेहपूर्ण बातें याद आती रहतीं। दोपहर में, गर्मी होने पर भी, दो बजे तक आग जलाए रहतीं और उनके स्टेशन से वापस आने पर गरम-गरम रोटियाँ सेंकतीं- उनके खा चुकने और मना करने पर भी थोड़ा-सा कुछ और थाली में परोस देतीं, और बड़े प्यार से आग्रह करतीं। जब वह, थके-हारे बाहर से आते, तो उनकी आहट पर वह रसोई के द्वार पर निकल आतीं और उनकी सलज्ज आँखें मुस्करा उठतीं। गजाधर बाबू को तब, हर छोटी बात भी याद आती और वह उदास हो उठते .... अब कितने वर्षों बाद यह अवसर आया था जब वह फिर उसी स्नेह और आदर के मध्य रहने जा रहे थे।

टोपी उतार कर गजाधर बाबू ने चारपाई पर रख दी, जूते खोलकर नीचे खिसका दिए, अंदर से रह-रहकर कहकहों की आवाज आ रही थी। इतवार का दिन था और उनके सब बच्चे

इकट्ठे होकर नाश्ता कर रहे थे। गजाधर बाबू के सूखे चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान आ गई, उसी तरह मुस्कराते हुए, वह बिना खाँसे अंदर चले आए। उन्होंने देखा कि नरेंद्र कमर पर हाथ रखे शायद गत रात्रि की फ़िल्म में देखे गए किसी नृत्य की नकल कर रहा था, और बसंती हँस-हँस कर दुहरी हो रही थी। अमर की बहू को अपने तन-बदन, आँचल या घूँघट का कोई होश नहीं था और वह उन्मुक्त रूप से हँस रही थी। गजाधर बाबू को देखते ही नरेंद्र धप से बैठ गया और चाय का प्याला उठाकर मुँह से लगा लिया। बहू को होश आया और उसने झट से माथा ढक लिया, केवल बसंती का शरीर रह-रहकर हँसी दबाने के प्रयत्न में हिलता रहा।

गजाधर बाबू ने मुस्कराते हुए इन लोगों को देखा। फिर कहा, ''क्यों नरेंद्र, क्या नकल हो रही थी ?'' ''कुछ नहीं बाबू जी।'' नरेंद्र ने सिटपिटा कर कहा। गजाधर बाबू ने चाहा था कि वह भी इस मनोविनोद में भाग लेते, पर उनके आते ही जैसे ही सब कुंठित हो चुप हो गए, इससे उनके मन में थोड़ी-सी खिन्नता उपज आई। बैठते हुए बोले, ''बसंती, चाय मुझे भी देना। तुम्हारी अम्मा की पूजा अभी चल रही है क्या?''

बसंती ने माँ की कोठरी की ओर देखा, ''अभी आती ही होंगी'', और प्याले में उनके लिए चाय छानने लगी। बहू चुपचाप पहले ही चली गई थी, अब नरेंद्र भी चाय का आख़िरी घूँट पी उठ खड़ा हुआ, केवल बसंती, पिता के लिहाज़ में, चौके में बैठी माँ की राह देखने लगी। गजाधर बाबू ने एक घूँट चाय पी, फिर कहा, ''बिट्टी-चाय तो फीकी है।''

''लाइए, चीनी और डाल दूँ।'' बसंती बोली।

''रहने दो, तुम्हारी अम्मा जब आएँगी, तभी पी लूँगा।''

थोड़ी देर में उनकी पत्नी हाथ में अर्घ्य का लोटा लिए निकली और अशुद्‌ध स्तुति कहते हुए तुलसी में डाल दिया। उन्हें देखते ही बसंती भी उठ गई। पत्नी ने आकर गजाधर बाबू को देखा और कहा, ''अरे आप अकेले बैठे हैं- यह सब कहाँ गए ?'' गजाधर बाबू के मन में फाँस-सी करक उठी, ''अपने-अपने काम में लग गए हैं- आख़िर बच्चे ही हैं।''

पत्नी आकर चौके में बैठ गई। उन्होंने नाक-भौं चढ़ाकर जूठे बर्तनों को देखा। फिर कहा,

''सारे में जूठे बर्तन पड़े हैं इस घर में धरम-करम कुछ नहीं। पूजा करके सीधे चौके में घुसो। फिर उन्होंने नौकर को पुकारा, जब उत्तर न मिला तो एक बार और उच्च स्वर में आवाज़ दी फिर पति की ओर देखकर बोली, ''बहू ने भेजा होगा बाज़ार।'' और एक लंबी साँस लेकर चुप हो गई।

गजाधर बाबू बैठ कर चाय और नाश्ते का इंतज़ार करते रहे। उन्हें अचानक ही गनेशी की याद आ गई। रोज़ सुबह, पैसेंजर आने से पहले वह गर्म-गर्म पूरियाँ और जलेबी बनाता था। गजाधर बाबू जब तक उठ कर तैयार होते, उनके लिए जलेबियाँ और चाय लाकर रख देता था। चाय भी कितनी बढ़िया, काँच के गिलास में ऊपर तक भरी लबालब, पूरे ढाई चम्मच चीनी और गाढ़ी मलाई। पैसेंजर भले ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेशी ने चाय पहुँचाने में कभी देर नहीं की। क्या मजाल कि कभी उससे कुछ कहना पड़े।

पत्नी का शिकायत भरा स्वर सुन उनके विचार में व्याघात पहुँचा। वह कह रही थीं, ''सारा दिन इसी खिच-खिच में निकल जाता है। इसी गृहस्थी का धंधा पीटते-पीटते उमर बीत गई। कोई जरा हाथ भी नहीं बँटाता।''

''बहू क्या किया करती है ?'' गजाधर बाबू ने पूछा।

''पड़ी रहती है। बसंती को तो फिर कहो कि कॉलेज जाना होता है।''

गजाधर बाबू ने जोश में आकर बसंती को आवाज़ दी। बसंती भाभी के कमरे से निकली तो गजाधर बाबू ने कहा, "आज से शाम का खाना बनाने की ज़िम्मेदारी तुम पर है। सुबह का भोजन तुम्हारी भाभी बनाएँगी।"

बसंती मुँह लटकाकर बोली "बाबू पढ़ना भी तो होता है।"

गजाधर बाबू ने बड़े प्यार से समझाया, "तुम सुबह पढ़ लिया करो। तुम्हारी माँ बूढ़ी हुई, उनके शरीर में वह शक्ति नहीं बची है। तुम हो, तुम्हारी भाभी हैं, दोनों को मिलकर काम में हाथ बँटाना चाहिए।"

बसंती चुप रह गई। उसके जाने के बाद, उसकी माँ ने धीरे से कहा, "पढ़ने का तो बहाना है। कभी जी ही नहीं लगता, लगे कैसे? शीला से ही फुरसत नहीं, बड़े-बड़े लड़के हैं उस घर में, हर वक्त वहाँ घुसा रहना, मुझे नहीं सुहाता। मना करूँ तो सुनती नहीं।"

नाश्ता कर, गजाधर बाबू बैठक में चले गए। घर छोटा था और ऐसी व्यवस्था हो चुकी थी कि उसमें गजाधर बाबू के रहने के लिए कोई स्थान न बचा था। जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थाई प्रबंध कर दिया जाता है, उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली-सी चारपाई डाल दी गई थी। गजाधर बाबू उस कमरे में पड़े-पड़े कभी-कभी अनायास ही इस अस्थायित्व का अनुभव करने लगते। उन्हें याद आती उन रेलगाड़ियों की, जो आतीं और थोड़ी देर रुककर किसी और लक्ष्य की ओर चली जातीं।

घर छोटा होने के कारण बैठक में ही अब अपना प्रबंध किया था। उनकी पत्नी के पास अंदर एक छोटा कमरा अवश्य था, पर उसमें एक ओर अचारों के मर्तबान, दाल, चावल के कनस्टर और घी के डिब्बों से घिरा था- दूसरी ओर पुरानी रज़ाइयाँ दरियों में लिपटी और रस्सी में बँधी रखी थीं, उसके पास एक बड़े से टीन के बक्स में घर भर के गरम कपड़े थे। बीच में एक अलगनी बँधी रखी थी जिस पर प्रायः बसंती के कपड़े लापरवाही से पड़े रहते थे। वह भरसक उस कमरे में नहीं जाते थे। घर का दूसरा कमरा अमर और उसकी बहू के पास था, तीसरा कमरा, जो सामने की ओर था, बैठक था। गजाधर बाबू के आने से पहले उसमें अमर की ससुराल से आई बेंत की तीन कुर्सियों का सेट पड़ा था, कुर्सियों पर नीली गद्दियाँ और बहू के हाथों के कढ़े कुशन थे।

जब कभी उनकी पत्नी को कोई लंबी शिकायत करनी होती तो अपनी चटाई बैठक में डाल पड़ जाती थी। तो वह एक दिन चटाई लेकर आ गई। गजाधर बाबू ने घर-गृहस्थी की बातें छेड़ीं, वह घर का रवैया देख रहे थे। बहुत हल्के से उन्होंने कहा कि अब हाथ में पैसा कम रहेगा, कुछ ख़र्च कम होना चाहिए।

"सभी खर्चे तो वाजिब हैं, किसका पेट काटूँ ? यही जोड़-गाँठ करते-करते बूढ़ी हो गई, न मन का पहना, न जोड़ा।"

गजाधर बाबू ने आहत, विस्मित दृष्टि से पत्नी को देखा। उनसे अपनी हैसियत छिपी न थी। उनकी पत्नी कमी का अनुभव कर उसका उल्लेख करती, यह स्वाभाविक था, लेकिन उनमें सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटका। उनसे यदि राय-बात की जाती कि प्रबंध कैसे हो, तो उन्हें चिंता कम, संतोष अधिक होता। लेकिन उनसे तो केवल शिकायत की जाती थी जैसे परिवार की सब परेशानियों के लिए ज़िम्मेदार थे।

"तुम्हें किस बात की कमी है अमर की माँ? घर में बहू है, लड़के-बच्चे हैं सिर्फ रुपए से ही आदमी अमीर नहीं होता।" गजाधर बाबू ने कहा और कहने के साथ ही अनुभव किया कि यह उनकी आंतरिक अभिव्यक्ति थी ऐसी कि उनकी पत्नी नहीं समझ सकती।

"हाँ, बड़ा सुख है न बहू से। आज रसोई करने गई है, देखो क्या होता है।" कहकर पत्नी ने आँखें मूँदीं, और सो गई। गजाधर बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए। यही है क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों में कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में, उन्होंने संपूर्ण जीवन काट दिया था ? उन्हें लगा कि वह लावण्यमयी युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचित है। गाढ़ी नींद में डूबी उनकी पत्नी का भारी-सा शरीर बहुत बेडौल और कुरूप लग रहा था, चेहरा श्रीहीन और रूखा था। गजाधर बाबू देर तक विस्मय से पत्नी को देखते रहे और फिर लेटकर छत की ओर ताकने लगे।

अंदर कुछ गिरा और उनकी पत्नी हड़बड़ाकर उठ बैठी लो बिल्ली ने कुछ गिरा दिया शायद, और वह अंदर भागी। थोड़ी देर में लौटकर आईं तो उनका मुँह फूला हुआ था, "देखा बहू को! चौका खुला छोड़ गई, बिल्ली ने दाल की पतीली गिरा दी। सभी तो खाने को हैं, अब क्या खिलाऊँगी ?" वह साँस लेने के लिए रुकी और बोली, "एक तरकारी और चार पराठे बनाने में सारा डिब्बा घी उड़ेल दिया। ज़रा-सा दर्द नहीं है, कमाने वाला हाड़ तोड़े और लोग यहाँ लुटाएँ। मुझे तो मालूम था कि यह सब काम किसी के बस का नहीं है।"

गजाधर बाबू को लगा कि पत्नी कुछ और बोलेगी तो उनके कान झनझना उठेंगे। ओंठ भींच करवट लेकर उन्होंने पत्नी की ओर पीठ कर ली।

रात का भोजन बसंती ने जानबूझकर ऐसा बनाया था कि कौर तक निगला न जा सके। गजाधर बाबू चुपचाप खाकर उठ गए, पर नरेंद्र थाली सरकाकर उठ खड़ा हुआ और बोला, ''मैं ऐसा खाना नहीं खा सकता।''

बसंती तुनककर बोली, ''तो न खाओ, कौन तुम्हारी ख़ुशामद करता है।''

''तुमसे खाना बनाने को किसने कहा था ?'' नरेंद्र चिल्लाया।

''बाबू जी ने।''

''बाबू जी को बैठे-बैठे यही सूझता है।''

बसंती को उठाकर माँ ने नरेंद्र को मनाया और अपने हाथ से कुछ बना कर खिलाया। गजाधर बाबू ने बाद में पत्नी से कहा, ''इतनी बड़ी लड़की हो गई और उसे खाना बनाने का शऊर तक नहीं आया।'' ''अरे सब कुछ आता है, करना नहीं चाहती।'' पत्नी ने उत्तर दिया। अगली शाम माँ को रसोई में देख, कपड़े बदलकर बसंती बाहर आई तो बैठक से गजाधर बाबू ने टोक दिया, ''कहाँ जा रही हो ?''

''पड़ोस में, शीला के घर।'' बसंती ने कहा।

''कोई ज़रूरत नहीं है, अंदर जाकर पढ़ो।'' गजाधर बाबू ने कड़े स्वर में कहा। कुछ देर अनिश्चित खड़े रहकर बसंती अंदर चली गई। गजाधर बाबू शाम को रोज़ टहलने चले जाते थे, लौटकर आए तो पत्नी ने कहा, "क्या कह दिया बसंती से। शाम से मुँह लपेटे पड़ी है। खाना भी कुछ नहीं खाया।"

गजाधर बाबू खिन्न हो गए। पत्नी की बात का उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। उन्होंने मन में निश्चय कर लिया कि बसंती की शादी जल्दी ही कर देनी है। उस दिन के बाद बसंती पिता से बची-बची रहने लगी। जाना होता तो पिछवाड़े से जाती। गजाधर बाबू को और रोष हुआ। लड़की के इतने मिज़ाज, जाने को रोक दिया तो पिता से बोलेगी नहीं। फिर उनकी पत्नी ने ही सूचना दी कि अमर अलग रहने की सोच रहा है।

'क्यों?' गजाधर बाबू ने चकित होकर पूछा।

पत्नी ने साफ़-साफ़ उत्तर नहीं दिया। अमर और उसकी बहू की शिकायतें बहुत थीं। उनका कहना था कि गजाधर बाबू हमेशा बैठक में पड़े रहते हैं, कोई आने जाने वाला हो तो कहीं बैठने की जगह नहीं। अमर को अब भी वह छोटा-सा समझते थे, और मौके-बेमौके टोक देते थे। बहू को काम करना पड़ता था और सास जब-तब फूहड़पन पर ताने देती रहती थी।

"हमारे आने के पहले भी कभी ऐसी बात हुई थी?" गजाधर बाबू ने पूछा। पत्नी ने सिर हिलाकर जताया कि नहीं। पहले अमर घर का मालिक बनकर रहता था- बहू को कोई रोक-टोक न थी, अमर के दोस्तों का प्राय: यहीं अड्डा जमा रहता था और अंदर से नाश्ता-चाय तैयार होकर आता रहता था। बसंती को भी वही अच्छा लगता था।

गजाधर बाबू ने बहुत धीरे से कहा, "अमर से कहो, जल्दबाज़ी की कोई ज़रूरत नहीं है।"

अगले दिन वह सुबह घूम कर लौटे तो उन्होंने पाया कि बैठक में उनकी चारपाई नहीं है। अंदर आकर पूछने वाले ही थे कि उनकी दृष्टि रसोई के अंदर बैठी पत्नी पर पड़ी। उन्होंने यह कहने को मुँह खोला कि बहू कहाँ है, पर कुछ याद कर चुप हो गए। पत्नी की कोठरी में झाँका तो अचार, रज़ाईयों और कनस्टरों के मध्य अपनी चारपाई लगी पाई। गजाधर बाबू ने कोट उतारा और कहीं टाँगने को दीवार पर नज़र दौड़ाई। फिर उसे मोड़कर अलगनी के कुछ कपड़े खिसकाकर, एक किनारे टाँग दिया। कुछ खाए पिए बिना ही अपनी चारपाई पर लेट गए। कुछ भी हो, तन आखिरकार बूढ़ा ही था। सुबह-शाम कुछ दूर टहलने अवश्य चले जाते, पर आते-जाते थक उठते थे। गजाधर बाबू को अपना बड़ा-सा, खुला हुआ क्वार्टर याद आ गया।

निश्चित जीवन, सुबह पैसेंजर ट्रेन आने पर स्टेशन की चहल-पहल, चिर-परिचित चेहरे और पटरी पर रेल के पहियों की खट-खट जो उनके लिए मधुर संगीत की तरह था। तूफ़ान और डाक गाड़ी के इंजनों की चिंघाड़ उनकी अकेली रातों की साथी थी। सेठ रामजीलाल के मिल के कुछ लोग कभी-कभी पास आ बैठते, वही उनका दायरा था, वही उनके साथी। वह जीवन अब उन्हें खोई निधि-सा प्रतीत हुआ। उन्हें लगा कि ज़िंदगी द्वारा ठगे गए हैं। उन्होंने जो कुछ चाहा उसमें से उन्हें एक बूँद भी न मिली।

लेटे हुए यह घर के अंदर से आते विविध स्वरों को सुनते रहे। बहू और सास की छोटी-सी झड़प, बाल्टी पर खुले नल की आवाज़, रसोई के बर्तनों की खटपट और उसी में दो गौरैयों का वार्तालाप-और अचानक ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब घर की किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह नहीं है, तो यहीं पड़े रहेंगे, अगर कहीं और डाल दी गई, तो वहाँ चले जाएँगे। यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं, तो अपने ही घर में परदेशी की तरह पड़े रहेंगे- और उस दिन के बाद सचमुच गजाधर बाबू कुछ नहीं बोले। नरेंद्र माँगने आया तो बिना कारण पूछे उसे रुपए दे दिए। बसंती काफ़ी अँधेरा हो जाने के बाद भी पड़ोस में रही तो भी उन्होंने कुछ नहीं कहा - पर उन्हें सबसे बड़ा ग़म था कि उनकी पत्नी ने भी उनमें कुछ परिवर्तन लक्ष्य नहीं किया। वह मन-ही-मन कितना भार ढो रहे हैं इससे वह अनजान ही बनी रही। बल्कि उन्हें पति के घर के मामले में हस्तक्षेप न करने के कारण शांति ही थी। कभी-कभी कह भी उठती, ''ठीक ही है, आप बीच में न पड़ा कीजिए, बच्चे बड़े हो गए हैं, हमारा जो कर्तव्य था, कर रहे हैं। पढ़ा रहे हैं, शादी कर देंगे।''

गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी को देखा। उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग में सिंदूर डालने की अधिकारी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई है कि अब यही उसकी संपूर्ण दुनिया बन गई है। गजाधर बाबू उनके जीवन के केंद्र नहीं हो सकते, उन्हें तो अब बसंती की शादी के लिए भी उत्साह बुझ गया था। किसी बात में हस्तक्षेप न करने के निश्चय के बाद भी उनका अस्तित्व उस वातावरण का एक भाग न बन सका। उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी, जैसी सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई थी। उनकी सारी खुशी एक गहरी उदासीनता में डूब गई।

इतने सब निश्चयों के बावजूद भी गजाधर बाबू एक दिन बीच में दखल दे बैठे। पत्नी स्वभावानुसार नौकर की शिकायत कर रही थी, ''कितना कामचोर है, बाज़ार की हर चीज़ में पैसा बनाता है, खाने बैठता है, तो खाता ही चला जाता है।'' गजाधर बाबू को बराबर यह महससू होता रहता था कि उनके घर का रहन-सहन और कुछ ख़र्च बिल्कुल बेकार है।

छोटा–मोटा काम है, घर में तीन मर्द हैं, कोई न कोई कर ही देगा। उन्होंने उसी दिन नौकर का हिसाब कर दिया। अमर दफ़्तर से आया तो नौकर को पुकारने लगा। अमर की बहू बोली, ''बाबूजी ने नौकर छुड़ा दिया है।''

'क्यों?'

'कहते हैं ख़र्च बहुत है।'

यह वार्तालाप बहुत सीधा–सा था, पर जिस टोन में बहू बोली, गजाधर बाबू को खटक गया। उस दिन जी भारी होने के कारण गजाधर बाबू टहलने नहीं गए थे। आलस्य में उठकर बत्ती भी नहीं जलाई–इस बात से बेखबर नरेंद्र माँ से कहने लगा, ''अम्मा तुम बाबूजी से कहती क्यों नहीं ? बैठे–बिठाए कुछ नहीं तो नौकर ही छुड़ा दिया। अगर बाबूजी यह समझें कि मैं साईकिल पर गेहूँ रख आटा पिसाने जाऊँ तो मुझसे यह नहीं होगा।'' 'हाँ अम्मा' –बसंती का स्वर था, ''मैं कॉलेज भी जाऊँ और लौटकर घर में झाड़ू भी लगाऊँ, यह मेरे बस की बात नहीं है।''

'बूढ़े आदमी हैं' अमर भुनभुनाया ''चुपचाप पड़े रहें। हर चीज़ में दखल क्यों देते हैं।'' पत्नी ने बड़े व्यंग्य से कहा, ''और कुछ नहीं सूझा तो तुम्हारी बहू को ही चौके में भेज दिया। वह गई तो पंद्रह दिन का राशन पाँच दिन में बनाकर रख दिया।'' बहू कुछ--कहे, इससे पहले गजाधर बाबू को लेटे देख बड़ी सिटपिटाई। गजाधर बाबू की मुखमुद्रा से वह उनके भावों का अनुमान न लगा सकी। वह चुप, आँखें बंद किए लेटे रहे।

गजाधर बाबू चिट्ठी हाथ में लिए अंदर आए और पत्नी को पुकारा। वह भीगे हाथ लिए निकली और आँचल से पोंछती हुई पास आ खड़ी हुई। गजाधर बाबू ने बिना किसी भूमिका से कहा, ''मुझे सेठ रामजीलाल की चीनी मिल में नौकरी मिल गई है। खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आएँ, यही अच्छा है। उन्होंने तो पहले ही कहा था, मैंने ही मना कर दिया।'' फिर कुछ रुककर, जैसे बुझी हुई आग में एक चिनगारी चमक उठे। उन्होंने धीमे स्वर में कहा, ''मैंने सोचा था कि परसों जाना है। तुम भी चलोगी ?'' ''मैं?'' पत्नी ने सकपका कर कहा, ''मैं चलूँगी तो यहाँ का क्या होगा ? इतनी बड़ी गृहस्थी, फिर सयानी लड़की................''

बात बीच में काट कर गजाधर बाबू ने थके, हताश स्वर में कहा, ''ठीक है, तुम यहीं रहो। मैंने तो ऐसे ही कहा था'' और गहरे मौन में डूब गए।

नरेंद्र ने बड़ी तत्परता से बिस्तर बाँधा और रिक्शा बुला लाया। गजाधर बाबू का टिन का बक्स और पतला–सा बिस्तर उस पर रख दिया गया। नाश्ते के लिए लड्डू और मठरी की डलिया हाथ में लिए गजाधर बाबू रिक्शे पर बैठ गए। एक दृष्टि उन्होंने अपने परिवार पर डाली और फिर दूसरी ओर देखने लगे और रिक्शा चल पड़ा। उनके जाने के बाद सब अंदर लौट आए, बहू ने अमर से पूछा, ''सिनेमा ले चलिएगा न ?'' बसंती ने उछलकर कहा, ''भइया, हमें भी।''

गजाधर बाबू की पत्नी सीधे चौके में चली गई। बची हुई मठरियों को कटोरदान में रखकर अपने कमरे में लाई और कनस्टरों के पास रख दिया, फिर बाहर आकर कहा, ''अरे नरेंद्र, बाबू जी की चारपाई कमरे से निकाल दे। उसमें चलने तक की जगह नहीं है।''

शब्दार्थ

लज्जा	–	शर्म
ख़ातिर	–	सत्कार
विषाद	–	दुःख
मनोविनोद	–	हँसी मज़ाक
आकांक्षी	–	इच्छा रखने वाला
उन्मुक्त	–	खुले रूप से
खिन्नता	–	दुःख
लिहाज़	–	आदर
आहत	–	दुखी

विस्मित	–	आश्चर्यचकित
हैसियत	–	सामर्थ्य
लावण्यमयी	–	सुंदरी
तुनकना	–	रूठना
निधि	–	संपत्ति
आंतरिक	–	भीतरी
व्याघात	–	रुकावट
स्तुति	–	प्रार्थना
अर्घ्य	–	देवता को जल अर्पित करना।
अपरिचित	–	अनजाना
खुशामद	–	चाटुकारिता, चमचागिरी
शऊर	–	तरीका
धनोपार्जन	–	पैसा कमाना
निमित्त	–	कारण
दायरा	–	सीमा
हताश	–	निराश
कुंठित	–	कुंठा से ग्रस्त, निराश

प्रश्न:–

1. रिटायर होने के बाद गजाधर बाबू क्यों खुश थे?

2. अपने ही घर जाकर गजाधर बाबू क्यों पराए की तरह हो गए?

3. गजाधर बाबू ने नौकर को क्यों निकाल दिया था?

4. गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी की ओर क्यों देखा?

5. फिर से नौकरी पर जाते समय गजाधर बाबू ने पत्नी से धीमे स्वर में क्या कहा?

6. निम्नलिखित वाक्यों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए–

(क) संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था।

(ख) इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे।

(ग) इस गृहस्थी का धंधा पीटते–पीटते उमर बीत गई। कोई जरा हाथ भी नहीं बँटाता।

(घ) उन्होंने अुनभव किया कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं।

7. निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करें–

नाक भौं चढ़ाना	हाथ बँटाना
फाँस सी करकना	पेट काटना
धंधा पीटना	जोड़–तोड़ करना
	ओंठ भींचना

पाठ –14

विज्ञान : वरदान या अभिशाप

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने संसार में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। अतीत काल का मनुष्य जिन बातों के बारे में सोचकर केवल कल्पना तक ही सीमित रहता था वे बातें आज प्रत्यक्ष देखने को मिलती हैं। विज्ञान ने समुद्र की अतल गहराइयों की माप से लेकर पर्वतों के उच्च शिखरों तक तथा भूमि से लेकर चंद्रमा तक की यात्रा करके विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया है। अब मनुष्य अपने चारों ओर जो कुछ भी देखता–सुनता या अनुभव करता है, उसमें विज्ञान का बहुत बड़ा योग है। जीवन की अनेक आवश्यकताओं को सुख–सुविधा से भरपूर कर देने में विज्ञान सबसे अधिक सहायक सिद्ध हुआ। इसलिए आज संसार भर में विज्ञान के चमत्कारपूर्ण कार्यों की खोज करने की स्पर्धा लगी हुई है। वही राष्ट्र कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त करता हुआ लगता है जो विज्ञान के क्षेत्र में बहुत आगे है। दूसरे शब्दों में हम यों कह सकते हैं कि उन्नति की दिशा में बढ़ने के लिए विज्ञान के चरण की बहुत आवश्यकता है और विज्ञान ने सचमुच में इतने चमत्कार किए हैं, उसका इतनी अधिक सीमाओं में विकास किया है कि उन पर ध्यान देना भी अपने आप में एक रोचक विषय है। सारांश यह है कि विज्ञान के चमत्कार अनेक दिशाओं में देखने को मिलते हैं और उनका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत है।

विज्ञान के चमत्कार की एक दिशा कृषि का क्षेत्र है। कृषि के क्षेत्र में विज्ञान ने बहुत बड़े चमत्कारपूर्ण कार्य कर दिखाए हैं। एक समय था जब मनुष्य एक छोटा–सा हल लेकर, बैलों की जोड़ी को रखकर खेत जोतता था। आज उसके स्थान पर ट्रैक्टर मौजूद है। ट्रैक्टर की मदद से दिनों का काम मिनटों में हो जाता है और किसान को इतना खून–पसीना एक करना भी नहीं पड़ता। विज्ञान के अविष्कारों द्वारा अब फ़सल में बहुत उपज देने वाले बीज बनाए जाते हैं।

उससे पैदावार कई गुनी बढ़ जाती है। उसके साथ ही खाद की सुविधाएँ भी जो यूरिया, एमोनियम सल्फ़ेट, फ़ास्फ़ेट आदि के रूप में प्राप्त हुई हैं वे उपज बढ़ाने में बहुत सहायक हैं। सिंचाई के लिए नल–कूपों, इंजन, पंपों आदि से बहुत मदद मिली है। दूसरे देशों में तो कृत्रिम वर्षा तक भी खेतों में करा देने का प्रबंध है। इस तरह विज्ञान का योग कृषि के क्षेत्र में बहुत लाभदायक रहा है। दो वर्ष पहले तो हमारे देश में भी इतनी पैदावार हुई थी कि एक बार तो ऐसा लगा कि जैसे देश की खाद्य समस्या ही हल हो गई हो। आगे भी कृषि के क्षेत्र में प्रगति करने के लिए खोज ज़ारी है।

औषधि के क्षेत्र में भी विज्ञान का चमत्कार भुलाने योग्य नहीं है। पुराने ज़माने के इलाज़ के तरीकों को गया–बीता समझा जाने लगा है। आज यहाँ पर यदि किसी को चोट लगी है तो एक्सरे द्वारा भीतर की टूटी हड्डी का ठीक–ठीक पता लगाया जा सकता है। हैजा, चेचक, मलेरिया आदि को रोकने के लिए इंजेक्शन देने की विधि ने बहुत लाभ किया है। टाइफ़ाइड जैसे गंभीर रोगों के लिए 'क्लोरोमाइसिटीन' जैसी प्रसिद्ध दवाएँ हैं। इतना ही नहीं शल्य चिकित्सा द्वारा और भी अधिक लाभदायक तरीके अपनाए जाने लगे हैं। आपरेशन करने की विधि ने रोगियों की काया ही पलट दी है। अब तो हृदय रोग, क्षय रोग, कैंसर जैसे भयंकर रोगों के भी इलाज की खोज कर ली गई है। नवीन प्रणाली, नवीन औषधियाँ और नवीन–नवीन साधनों ने मनुष्यों के जीवन को सुखी बनाने में बहुत बड़ी सहायता की है।

यातायात की दिशा में भी विज्ञान का चमत्कार देखने योग्य है। आज की दुनिया पैदल और घोड़ों पर बैठकर यात्रा करने की दुनिया नहीं है। आज मोटर, ट्रेन, समुद्री जहाज़ और वायुयानों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर सामान जाता है। एक जगह का यात्री दूसरी जगह जाता है। आज के युग में आप सुबह की चाय यहाँ पीजिए और दोपहर का खाना इंग्लैंड में खाइए और शाम को अमेरिका पहुँच जाइए। आपके पास कितने ही भारी मशीन के सामान हों उनको पानी के जहाज़ में आसानी से रखकर यहाँ लाया जा सकता है और वे उतारे जा सकते हैं। इस तरह आज देश से यदि कहीं जाना है तो छोटी से लेकर बड़ी से बड़ी सुविधाएँ वर्तमान हैं। आवागमन को विज्ञान ने बहुत सरल बना दिया है।

छापेख़ाने का अविष्कार भी विज्ञान की बहुत बड़ी सहायता देने वाला अंश है। शिक्षा

के प्रसार में इससे बहुत बड़ी सहायता मिली है। आज के विद्यार्थी को पुस्तकों की प्रतिलिपि करनी नहीं पड़ती। लेखक जो कुछ लिखता है वह थोड़े ही दिनों में विद्यार्थियों के सामने आ जाता है। एक अध्यापक को प्रत्येक विद्यार्थी के लिए परेशानी उठानी नहीं पड़ती। पुस्तकें छात्रों के पास हैं। इतना ही नहीं, रोज़ाना अख़बार छपता है। देश-विदेश की सूचनाएँ रोज़ाना तरह -तरह के अख़बारों में छपती हैं। हम अपने घर में बैठे हुए यह जान लेते हैं कि संसार के किस देश में शांति है और कहाँ पर क्रांति है। आज किस देश का बड़ा नेता हमारे यहाँ आ रहा है और हमारे यहाँ के नेता कहाँ पहुँच गए हैं और किसने उनका किस प्रकार हँसकर या हाथ मिलाकर अभिनंदन किया है। अपनी वस्तुओं के बारे में जानकारी देने वाले विज्ञापनों से जनता तथा व्यापारी दोनों को ही लाभ होता है। यह सब इस छापेख़ाने की प्रगति से संभव हो सका है।

वैज्ञानिक चमत्कारों में अकेले बिजली ने सबसे अधिक प्रगति की है। बिजली का हमारे दैनिक जीवन में बहुत बड़ा सहयोग है। इससे ट्राम, ट्रेन, पंखा, लाइट, कूलर, फ्रिज, टेलीविज़न, लिफ़्ट आदि न जाने कितनी चीज़ें चलती हैं। थोड़ी देर को भी बिजली बंद हो जाती है तो ये सारी वस्तुएँ बेकार-सी लगने लगती हैं। बिजली पैदा करने वाले अन्य अनेक प्रकार के उपकरण हैं जो बिजली के प्रयोगों की सहायता से बिजली पैदा करते हैं। बिजली की खपत बहुत अधिक बढ़ गई है। ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसका बिजली के बिना जीवन-निर्वाह आज के ज़माने में हो सकता है।

मनोरंजन के साधनों को उपलब्ध कराने की दिशा में भी विज्ञान के चमत्कार उल्लेखनीय हैं। साधारण गाना गाने वाले, कठपुतली वाले या नाटक दिखाने वालों की अंशतः ही आवश्यकता रह गई है। आज हमारे पास रेडियो है, जिसमें अच्छे से अच्छे कलाकारों के गाने, नाटक, वार्ताएँ तथा अन्य नाना प्रकार के प्रोग्राम आते हैं। ग्रामोफ़ोन से मनचाहे रिकार्ड बजा सकते हैं। रेडियोग्राम और भी अधिक मनोरंजन देने वाला है। सबसे अधिक योग तो टेलीविज़न का है। आप जो सुनते हैं, जिस स्थिति में सुनते हैं, उसको अपनी आँखों से टेलीविज़न पर देख सकते है। आज घर-घर में टेलीविज़न लगा है जिससे देश-विदेश के कार्यक्रमों के चित्र प्रसारित किए जाते हैं। चुनी हुई फ़िल्मों के चुने हुए अंशों को दिखाने के लिए 'चित्रहार' प्रोग्राम आता है। चलचित्र तो वैसे ही मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन है। उसे भी सप्ताह में कई-कई बार टेलीविज़न पर ही देख लीजिए। अन्य अनेक वस्तुएँ-मशीन से बने खिलौने, कैमरा आदि न

जाने कितनी मनोरंजन की वस्तुएँ आधुनिक युग में हम देखते हैं, उन सब साधनों को उपलब्ध कराने में विज्ञान का बहुत बड़ा संपूर्ण सहारा है।

मशीनों का निर्माण भी विज्ञान के द्वारा उपलब्ध बहुत बड़ा साधन है। जिस कार्य को सैंकड़ों मनुष्य मिलकर भी नहीं कर सकते थे, मशीनों के निर्माण ने उसे ऐसा सुगम बना दिया है कि एक ही आदमी उन सबसे जल्दी और अच्छा कार्य कर सकता है। एक मशीन को काम में लाने के लिए दूसरी मशीन आवश्यक है, दूसरी को काम लाने के लिए तीसरी और फिर चौथी। यानी एक कल पुर्ज़े से दूसरे का संबंध जुड़ा हुआ है। चाहे वह यातायात के साधन की मशीन हो, फल बनाने या ज़मीन से तेल निकालने की मशीन हो। मशीन का मशीन से संयोग एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है और मानव को आगे बढ़ा रहा है। यह मशीन की ही तो करामात है कि पेट्रोल की कमी से त्रस्त देश में समुद्रों से तेल की खोज का कार्य हो रहा है। मानव को आगे बढ़ाने में कलपुर्ज़ों और मशीनों का बहुत बड़ा सहारा है। सुंदर से सुंदर वस्त्र, वस्तुएँ और आवश्यक सामग्रियाँ मशीनों के वरदान हैं तथा दूसरे शब्दों में विज्ञान के वरदान हैं।

विज्ञान के चमत्कारों में शस्त्रास्त्र निर्माण के क्षेत्र में जो चमत्कार हुए हैं उनका उल्लेख करना आवश्यक है। छोटे–मोटे हथियारों की दशा तो विज्ञान ने बदल ही दी है। आज तो स्वचालित हथियारों की बहुत बड़ी आवश्यकता है। गोली, गोला, बारूद, बम, टैंक आदि तो हैं ही, सबसे बड़ी बात तो परमाणु बम तथा हाइड्रोजन बम जैसे विनाशकारी हथियारों की है। अमेरिका ने एक बार जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर अणु बम डालकर उसके भयंकर परिणामों से संसार को अवगत करा दिया। हाइड्रोजन बम का भी निर्माण होने लगा है जो सारे विश्व की मानवता को भी समाप्त कर सकता है। संसार के उदात्त विचारों के और इन भयंकर हथियारों के परिणाम से डरने वाले राष्ट्रों ने यह समझौता भी करने का प्रयास किया है कि वे परमाणु बम जैसे हथियारों का उपयोग नहीं करेंगे। अमेरिका, रूस, इंग्लैंड, फ्रांस, चीन ये पाँच देश परमाणु शक्ति से संपन्न देश थे। तभी पिछले दिनों भारत ने भूमिगत परमाणु विस्फोट का सफल प्रयोग कर के संसार भर में तहलका मचा दिया है। भारत अब पाँच राष्ट्रों के साथ छठा परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र गिना जाने लगा है। पर भारतवर्ष ने बार–बार दुहराया है कि वह इस परमाणु शक्ति का उपयोग देश की प्रगति के लिए करेगा किसी के खिलाफ़ युद्ध के लिए नहीं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विज्ञान के क्षेत्र का विस्तार होता जा रहा है। मानव चंद्रमा पर कई बार पहुँच गया है और हथियार भी बना रहा है। यहाँ यह संदेह होता है कि इस तरह विज्ञान के चमत्कार लाभदायक हैं या हानिकारक। अनेक लाभ हमने अभी गिनाए हैं। मानव के विनाश के साधन भी विज्ञान की देन हैं तो विज्ञान वरदान है या अभिशाप? उत्तर स्पष्ट है- विज्ञान न वरदान है न अभिशाप। मनुष्य चाहे तो उसे वरदान के रूप में ले सकता है, अगर चाहे तो संसार का नाश करके अभिशाप के रूप में ले सकता है।

जिस प्रकार मनुष्य के हाथ में एक चाकू है, वह चाहे तो उसका उपयोग फल काटने के लिए कर सकता है और चाहे तो दूसरों का गला भी काट सकता है। इसमें दोष चाकू का नहीं है, दोष चाकू के चलाने वाले का है। विज्ञान का भी कोई दोष नहीं है विज्ञान का उपयोग करने वालों का है। यदि उसका उपयोग मानव कल्याण के लिए होगा तो विज्ञान वरदान है। यदि उसका उपयोग मानव विनाश के लिए होगा तो विज्ञान अभिशाप है। अब तो मनुष्य को देखना है कि उसकी बुद्धि किस स्तर की है। वह विज्ञान का प्रयोग भले के लिए करने की बुद्धि रखता है तो फिर विज्ञान कोई आपत्ति नहीं है। इस संबंध में मनुष्य को सचेत करते हुए रामधारी सिंह 'दिनकर' ने जो विचार रखे हैं वह बहुत ध्यान देने योग्य हैं-

सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तजकर मोह स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी अज्ञान,
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान,
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

शब्दार्थ

वरदान	–	Blessing
अभिशाप	–	Curse
अभूतपूर्व	–	जो पहले न हुआ हो
चमत्कार	–	Miracle
अविष्कार	–	खोज
कृत्रिम	–	बनावटी
गया–बीता	–	अनुपयोगी, बेकार
शल्य चिकित्सा	–	Operation
हृदय रोग	–	दिल की बीमारी
क्षय रोग	–	Tuberculosis
यातायात	–	Transportation
छापाख़ाना	–	Press
प्रतिलिपि	–	Copy
कठपुतली	–	Puppet
कलपुर्ज़े	–	मशीन के अंग
विनाशकारी	–	बरबाद करने वाला
अणु बम	–	Atom bomb

परमाणु	–	Nuclear
विस्फोट	–	Explosion

प्रश्न :–

1. उन्नति की दिशा में बढ़ने के लिए क्या आवश्यक है?

2. कृषि के क्षेत्र में विज्ञान का क्या योगदान है?

3. यातायात की दिशा में चमत्कार से आज यात्रा में क्या अंतर हुआ है?

4. छापेखाने के अविष्कार से क्या–क्या लाभ हुए हैं?

5. आज क्या–क्या मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं?

6. शस्त्रास्त्रों के अविष्कार का क्या बुरा परिणाम हुआ है?

7. स्पष्ट कीजिए– 'दोष चाकू का नहीं, दोष चाकू चलाने वाले का है'

पाठ – 15

पंथ पर चले चलो

– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

मत घबराओ पथिक पंथ पर चले चलो
चलते चलते ठोकर लग ही जाती है।
कदम उठाने से ही जो डरते हैं वे
क्या जाने पथ की पुकार क्या होती है ?
तट तक ही जाने से घबराने वाले
क्या जानें क्या धार सरित की होती है ?
तूफ़ानों के बीच नाव खेने वाले
हँसते–हँसते पार लगे देखे मैंने।
यद्यपि ऐसा ही अक्सर हो जाता है
लहरों में भी नौका फँस ही जाती है।
निराधार पथ पर चलता नभ का राही
केवल अपने पंखों का विश्वास लिए;
मधुर–मधुर कुछ गाता जाता है बेसुध

अंतरतम में घावों का आकाश लिए।
धरती का हर तरु उसका स्वागत करता
किंतु बधिक भी छिपे ओट में रहते हैं।
नोक विषभरी जिनके तीखे तीरों की
चुपके से पंखों में चुभ ही जाती है॥
माना तुम साधन विहीन हो, पर उसकी
क्षण भर ही चिंता न तुम्हें करनी होगी;
है भविष्य का अंधकारमय पथ तो क्या
मंज़िल तो तुमको तय करनी ही होगी।
बाती, साधक स्वयं ज्योति बन जाता है।
हाँ, ऐसा ही प्रायः होते देखा है
जलते-जलते बाती बुझ भी जाती है॥

शब्दार्थ

सरित	–	नदी
निराधार	–	बिना आधार के, बिना सहारे के
बेसुध	–	बेहोश
बधिक	–	हत्यारा
साधक	–	प्रयत्न करने वाला
पंथ	–	रास्ता, पथ
पथिक	–	राहगीर

नौका	–	नाव
अंतरतम	–	भीतर
ज्योति	–	प्रकाश

प्रश्न:–

1. पथ की पुकार को कौन सुन पाने में सफल होता है?

2. तूफ़ानों के बीच नाव खेने वालों को कवि ने किस रूप में देखा है?

3. नभ का राही कौन होता है? वह निराधार पथ पर कैसे चलता है?

4. साधन विहीन राहगीर को कवि क्या प्रेरणा देता है?

5. निम्नलिखित पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

(क) निराधार पथ पर चलता नभ का राही
केवल अपने पंखों का विश्वास लिए
मधुर मधुर कुछ गाता जाता है बेसुध
अंतरतम में घावों का आकाश लिए।

(ख) माना तुम.................................... ज्योति बन जाता है।

पाठ – 16

भारतीय संस्कृति

'संस्कृति' शब्द का संबंध 'संस्कार' से है। संस्कार का अभिप्राय है किसी व्यक्ति या जाति के व्यवहार का संशोधन या परिष्कार करना। जाति की ही सीमित रूप में अभिव्यक्ति व्यक्ति में होती है। इन्हीं जातीय संस्कारों के आधार पर संस्कृति का निर्माण होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी वंश परंपरा से इन संस्कारों को ग्रहण करता है। इन संस्कारों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। संस्कृति का गठन जिन विभिन्न तत्वों से मिलकर होता है, वे हैं– उस क्षेत्र का परिवेश, धार्मिक विचार, उस प्रदेश या क्षेत्र में रहने वाले लोगों का रहन–सहन, रीति–रिवाज़, आचार–विचार आदि।

संस्कृति के दो रूप माने जाते हैं। एक संस्कृति का बाह्य रूप और दूसरा आंतरिक रूप। संस्कृति के बाह्य रूप को सभ्यता कह सकते हैं। सभ्यता का वास्तविक अर्थ व्यवहार की साधुता या शुचिता है। इसी को जब व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं तो सभ्यता के अंतर्गत पूरे समाज का रहन–सहन और रीति–रिवाज़ आ जाते हैं। इसका संबंध देश के वातावरण, जातीय जीवन एवं परिस्थिति आदि से होता है। उदाहरणार्थ– बड़ों के चरण–स्पर्श करना, नहा–धोकर खाना, ज़मीन पर बैठना, वहाँ का पहनावा, कोरे या बिना सिले कपड़ों को शुद्ध मानना, किसी विशेष दिशा में सिर रखकर सोना आदि।

इसी प्रकार विभिन्न देशों में मंगल और अमंगल पर अपने–अपने ढंग से विचार किया जाता है। भारत में आम्र, कदली, श्रीफल आदि को मंगलसूचक माना जाता है। उल्लू को भारत में अशुभ समझा जाता है जबकि पाश्चात्य देशों में उल्लू को बुद्धिमत्ता का प्रतीक माना जाता है। ये पदार्थ उस देश की संस्कृति के स्वरूप को प्रकट करते हैं।

किसी देश की आंतरिक संस्कृति को वे बातें प्रकट करती हैं जिनसे उस देश की मानसिकता या आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का पता चलता है। भारत की आंतरिक संस्कृति को बताने वाले निम्नलिखित तत्व हैं –

(1) आध्यात्मिकता, (2) पुनर्जन्म में विश्वास,

(3) समन्वय बुद्धि, (4) वर्णाश्रम व्यवस्था,

(5) बाह्य एवं आंतरिक शुद्धि, (6) अहिंसा, करुणा और विनय,

(7) प्रकृति प्रेम, (8) उत्सव प्रियता।

(1) आध्यात्मिकता– ईश्वर के प्रति विश्वास तथा जीवन में तप और त्याग से रहना। इसके अंतर्गत ईश्वर की सर्वत्र विद्यमानता में विश्वास रखना तथा आत्मा की अमरता और शरीर की नश्वरता को स्वीकार करना प्रमुख हैं। इससे हमारे मन में परोपकार की भावना रहती है। हमारी परंपरा में शिवि, दधीचि आदि इसके उदाहरण हैं।

(2) पुनर्जन्म में विश्वास– भारत के सभी धर्मों में पुनर्जन्म में विश्वास प्रकट किया गया है। मनुष्यों के इस जन्म में प्राप्त सुख–दुःख के कारण पूर्व जन्म में अच्छे कर्म करने की प्रेरणा मिलती है।

(3) समन्वय बुद्धि – संसार में बहुत–सी परस्पर विरोधी बातें दिखाई देती हैं। विभिन्न शरीरों में, अनेक आत्माओं में एकता स्थापित की गई है। सभी आत्माएँ उस परमात्मा का अंश हैं। हमारे देश में विभिन्न मत–मतांतरों, धर्मों और विचारों को समान आदर से देखा जाता है।

(4) वर्णाश्रम व्यवस्था– वर्णाश्रम व्यवस्था हमारे सामाजिक जीवन का आधार है। सामाजिक कार्यों का विभाजन चार वर्गों में उनके कार्यों के अनुसार किया गया है। प्रत्येक वर्ण का अपना महत्व है। समाज में शिक्षा, देशवासियों के हितों की रक्षा, उनके व्यवसाय की उन्नति और सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से चार वर्णों का होना युक्तिसंगत है।

(5) बाह्य और आंतरिक शुद्धि– भारतीय संस्कृति में मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार की शुद्धि को महत्व दिया गया है। जिस प्रकार मन का प्रभाव बाहरी पदार्थों पर पड़ता है उसी प्रकार बाहरी पदार्थों का प्रभाव मन पर पड़ता है। बाहरी शुद्धि नहाने–धोने से, खान–पान में सफ़ाई से होती है। मन की शुद्धि को भारतीय संस्कृति में महत्व दिया गया है।

(6) अहिंसा, करुणा और विनय–अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। हिंसा से यहाँ तात्पर्य किसी का वध करने से ही नहीं वरन् दूसरों को दु:खी करना तथा उनका उचित भाग हड़प लेना भी हिंसा है। इसी प्रकार करुणा, प्राणी मात्र के प्रति दया और विनय, नम्र व्यवहार को भी भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं में गिना गया है।

प्राचीन काल से प्रकृति प्रेम, उत्सवप्रियता का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व रहा है। यहाँ सभी ऋतुएँ समय पर आती हैं और अपने अनुकूल फल–फूलों का सृजन करती हैं। प्रकृति प्रेम के कारण ही वृक्षों को पानी देना, उनकी पूजा करना भी धार्मिक कार्य माना गया है।

उत्सव और पर्व भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। हमारे तीर्थ, गंगा स्नान, होली दीवाली, रक्षा–बंधन आदि पर्वों का विशेष महत्व है। इसी प्रकार रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी आदि का अपना धार्मिक महत्व रहा है। इन उत्सवों पर हम अपने पूज्य महापुरुषों का स्मरण करते हैं और उनके जीवन से कुछ सीखने का संकल्प करते हैं।

उपर्युक्त विवेचन में भारतीय संस्कृति के जिन विभिन्न लक्षणों एव गुणों की चर्चा की गई है उससे यह स्पष्ट झलकता है कि भारतीय संस्कृति अपने परिवेश में महान है। इतना ही नहीं उसकी 'वसुधैव–कुटुम्बकम्' की भावना संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखती है। यह कितना उदात्त विचार है। यदि सभी देश इसे अपना मूल मंत्र बना लें तो विश्व शांति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

शब्दार्थ

संशोधन	–	सुधार
परिष्कार	–	शुद्ध करना

अभिव्यक्ति	–	कहना
निरंतर	–	हमेशा, लगातार
गठन	–	बनावट
परिवेश	–	वातावरण
साधुता	–	सज्जनता
शुचिता	–	पवित्रता
परिप्रेक्ष्य	–	संदर्भ (Context)
मंगल	–	कल्याण
कदली	–	केला
पाश्चात्य	–	पश्चिम का
स्वरूप	–	आकार
आध्यात्मिकता	–	ईश्वर के प्रति चिंतन, धार्मिक प्रवृत्ति (spirituality)
पुनर्जन्म	–	दूसरा जन्म
समन्वय	–	मिश्रण
शुद्धि	–	परिष्कार
सृजन	–	निर्माण
अभिन्न	–	जिसे अलग न किया जा सके
विवेचन	–	वर्णन करना
उदात्त	–	महान
अग्रसर	–	आगे बढ़ना

प्रश्न :–

1. संस्कृति का अभिप्राय क्या है? इसका निर्माण कैसे होता है?
2. भारत में किन पर्वों का अधिक महत्व है?
3. सभ्यता किसे कहते हैं?
4. भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग कौन–कौन से हैं?
5. आंतरिक संस्कृति को बताने वाले कौन–कौन से तत्व हैं?
6. भारत में किन फलों को मंगलसूचक माना जाता है?
7. 'वसुधैव कुट्रम्बकम्' की भावना को स्पष्ट करें।
8. भारतीय संस्कृति में किस प्रकार की शुद्धि को मान्यता दी जाती है?
9. भारतीय धार्मिक उत्सवों में क्या करते हैं?
10. भारतीय सामाजिक जीवन का क्या आधार है?

पाठ – 17
भारत के धर्म

भारत में कई धर्मों के मानने वाले पाए जाते हैं– हिंदू, मुसलमान, जैन, सिख, पारसी, ईसाई, यहूदी आदि। किंतु धर्मों की यह विभिन्नता बाहरी है। इसकी तह में एक मौलिक एकता है, जो हमारे देश की भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता का परिणाम है।

भारत में हिंदू धर्म को मानने वालों की संख्या सबसे अधिक है। हिंदू धर्म की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी उदारता और सहनशीलता। इसी कारण हिंदू धर्म के अनेक मत और संप्रदाय हैं। हिंदू धर्म में 'निराकार' ईश्वर को मानने वाले भी हैं तो अवतार के रूप में उसके 'साकार' रूप की कल्पना कर विष्णु के विभिन्न अवतारों राम, कृष्ण आदि को मानने वाले वैष्णव भी हैं। शिव की उपासना करने वाले 'शैव' भी हैं तो शक्ति की पूजा करने वाले 'शाक्त' भी हैं। विचार और कर्म की शुद्धता हिंदू धर्म के मुख्य गुण हैं।

छठी ई. पू. में भारत में एक धार्मिक क्रांति हुई इसके प्रधान नेता वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध थे। दोनों ने घर छोड़कर तप साधना की और अपने–अपने तरीके से सत्य की खोज कर उसका प्रचार किया। दोनों ने अहिंसा और दया को अपने उपदेशों में ऊँचा स्थान दिया। महावीर ने जैन धर्म और गौतम ने बौद्ध धर्म को प्रवर्तित किया। इन दोनों धर्मों में मनुष्यों की समानता पर बल दिया गया है। बौद्ध धर्म का प्रचार विदेशों में भी खूब हुआ। इस समय भारत में भी बौद्ध धर्म के मानने वालों की संख्या काफ़ी है। जैन धर्म भारत के बाहर अपना प्रभाव नहीं छोड़ सका पर भारत में अब भी कई लोग जैन धर्म को मानते हैं।

मुसलमानों की ओर से भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार हुआ। इस्लाम समानता और

भ्रातृ–भाव पर ज़ोर देता है। इस्लाम में मूर्ति पूजा की मनाही है। इस्लाम में 'एक ईश्वर' के विचार को माना जाता है। भारत में इस्लाम अत्यधिक लोकप्रिय हो जाता यदि ठीक इसी समय समानता और भक्ति पर बल देने वाले न होते। भारत में हिंदुओं को छोड़कर मुसलमानों की संख्या अन्य धर्मों के मानने वालों से अधिक है।

मध्य युग में गुरु नानक देव ने सिख धर्म शुरू किया। इस धर्म को परवर्ती गुरुओं ने अपनी वाणी से पुष्ट किया। आज इस पंथ के अनुयायी और गुरुद्वारे पंजाब में तो हैं ही, सारे भारत में भी बिखरे हुए हैं।

अंग्रेज़ और अन्य यूरोपियन जातियों के शासनकाल में भारत में ईसाई धर्म का खूब प्रचार हुआ। इस काम को ईसाई मिशनों ने ज़ोर–शोर के साथ चलाया। यह धर्म आदिम जातियों और पिछड़ी जातियों के बीच काफ़ी लोकप्रिय हुआ। आज भारत में ईसाई धर्म मानने वालों की काफ़ी संख्या है।

पारसी और यहूदी धर्मावलंबी भी इस देश में रह रहे हैं किंतु इनकी संख्या अधिक नहीं है।

भारत धर्म निरपेक्ष देश है। इस कारण यहाँ धर्म के क्षेत्र में पूरी स्वतंत्रता है। सबको धार्मिक विश्वास और पूजा विधि की पूरी छूट है। भारत में सभी धर्म फल–फूल रहे हैं और आपस में शांति से रह रहे हैं।

शब्दार्थ

विभिन्न	–	अनेक प्रकार के
तह	–	गहराई
मौलिक	–	स्वाभाविक
परिणाम	–	फल, result

संप्रदाय	–	धार्मिक समुदाय
अवतार	–	जन्म लेना
निराकार	–	बिना आकार का
साकार	–	जिसका रूप और आकार हो
वैष्णव	–	विष्णु का पुजारी
शाक्त	–	शक्ति का पुजारी
क्रांति	–	आंदोलन, revolution
परवर्ती	–	बाद का
पुष्ट	–	मज़बूत
अनुयायी	–	अनुसरण करने वाला, follower
भ्रातृभाव	–	भाईचारा
निरपेक्ष	–	उदासीन
धर्मावलंबी	–	धर्म को मानने वाला
लोकप्रिय	–	प्रसिद्ध
प्रवर्तित	–	उत्पन्न, विकसित

प्रश्न :–

1. भारत में कितने प्रकार के धर्म पाए जाते हैं ?

2. भारत में सबसे अधिक संख्या किस धर्म के मानने वालों की है ?

3. हिंदू धर्म की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

4. इस्लाम सबसे अधिक ज़ोर किस बात पर देता है ?

5. भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र क्यों कहा जाता है ?

6. जैन धर्म और बौद्‌ध धर्म के प्रर्वतकों के बारे में लिखिए।

7. गुरु नानक देव ने कौन सा धर्म शुरू किया ?

8. भारत में ईसाई धर्म का प्रचार किसके शासन में हुआ ?

पाठ – 18

भारतीय नृत्य कला

'नाट्यशास्त्र' प्रदर्शनीय कलाओं का सबसे पुराना ग्रंथ माना जाता है। विश्वास किया जाता है कि जगत रचयिता ब्रह्मा से ज्ञान प्राप्त करने के बाद भरत मुनि ने इस ग्रंथ की रचना की थी।

नाट्यशास्त्र के वर्तमान स्वरूप की रचना 200 ई. पू. और 200 ई. के बीच हुई थी। इसके 36 अध्याय हैं और ये नाटक, नृत्य और संगीत के बारे में शास्त्रीय ज्ञान प्रदान करते हैं। इसमें बताए गए नियम बहुत स्पष्ट और विस्तृत हैं।

शास्त्रीय नृत्यः

नाट्यशास्त्र के सूत्रों पर आधारित नृत्य को शास्त्रीय नृत्य कहते हैं। मुख्य रूप में शास्त्रीय नृत्य के दो पक्ष तांडव और लास्य हैं। शक्ति और बल तांडव की विशेषता है तथा सौंदर्य और सुकुमारता लास्य की। तांडव का संबंध शिव से है और लास्य का पार्वती से। शुद्ध मुद्रा को नृत्त तथा अभिव्यक्त करने पर इसको नृत्य कहते हैं। मंच पर प्रदर्शन प्रारंभ करने से पूर्व शास्त्रीय परंपरा के नर्तक अथवा नर्तकी को कई वर्षों तक प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ता है।

शास्त्रीय नृत्य के प्रमुख रूप :

भारत में शास्त्रीय नृत्य के चार प्रमुख रूप हैं–

भरत नाट्यम्, कथकली, मणिपुरी, कथक।

भरतनाट्यम् प्राचीनतम और भारत का अत्यंत लोकप्रिय नृत्य है। पहले इसके कई नाम थे। कुछ लोग इसको 'भारतम्', कुछ 'नाट्यम्', कुछ 'देसी अट्टम' और कुछ 'सादिर' कहते थे।

तमिलनाडु के थंजवुर और कांचीपुरम् जिले भरतनाट्यम के विकास के केंद्र रहे हैं। सभी शुभ अवसरों पर देवदासियों (मंदिर नर्तकियों) द्वारा इसका एकल प्रदर्शन प्रस्तुत किया जाता था। बाद में इसको राजाओं और अमीर लोगों का संरक्षण प्राप्त हुआ और यह अपनी पवित्रता से धीरे-धीरे हटने लगा।

नर्तक को नाटुवानर निर्देश देता है। नाटुवानर संगीतकार होता है और शिक्षक भी। दूसरा संगीतकार तबला बजाता है। भरतनाट्यम के लिए कर्नाटक शैली का संगीत बजाया जाता है। हाथों से दोनों तरफ़ से बजाया जाने वाला मृदंगम् ताल प्रस्तुत करता है।

कथकली का घर केरल है। कथकली का शाब्दिक अर्थ 'कथा नाटक' है। इसमें संगीत, नृत्य, काव्य और नाटक का मिश्रण होता है। इसके वर्तमान रूप का विकास रामनाट्टम् और कृष्णनाट्टम् जैसे इसके पुराने रूपों से हुआ है।

कथकली नृत्य नाटक सुबह से शाम तक चलता रहता है। कलाकार विशेष प्रकार की वेषभूषा, चेहरे पर मुखौटे जैसी रूपसज्जा और सिर के लिए ऊँचे-ऊँचे मुकुटनुमा टोप का प्रयोग करते हैं। परंपरा के अनुसार सभी नर्तक पुरुष ही होते हैं। स्त्री पात्रों का अभिनय प्रायः बालकों द्वारा किया जाता है। इसके लिए कोई मंच नहीं होता। दर्शकों के बैठने के लिए ज़मीन पर कुछ चटाइयाँ बिछाई जाती हैं। मंच पर प्रकाश का प्रबंध केवल एक पीतल के दीप से किया जाता है, जिसमें नारियल का तेल जलता है। इसमें दो गायक गायन प्रस्तुत करते हैं। चंडा नामक एक बड़ा ढोल कथकली का मुख्य वाद्य है। इसको दो मुड़ी हुई डंडियों से, एक तरफ से, बजाया जाता है। तबला, घंटी और दूसरे ढोल को मिलाकर वाद्ययंत्र पूर्ण हो जाते हैं। ताल के अतिरिक्त यही वाद्य यंत्र ध्वनि का वातावरण भी प्रस्तुत करते हैं।

उत्तर पूर्व में बसा मणिपुर, मणिपुरी नृत्य का घर है। इसका विकास स्थानीय लोक नृत्यों से हुआ है, जिनकी पृष्ठभूमि धार्मिक है। 'लाई हरोबा' मणिपुर का प्राचीनतम नृत्य नाट्य है और यह लोक संगीत और पुराणों पर आधारित है। लेकिन रासलीला सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। इसमें राधा-कृष्ण के प्रेम का वर्णन है। मणिपुरी नृत्य शैली में सौंदर्य और कोमलता पर अधिक बल दिया जाता है। स्त्रियों के वस्त्र अत्यंत अलंकृत होते हैं।

इस नृत्य में गायकों के अतिरिक्त खोल, मंजीरा और बाँसुरी का प्रयोग भी होता है।

कत्थक उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य है। कथक का अर्थ हैं 'कहानी सुनाने वाला'। प्राचीन काल में कथा-वाचक पौराणिक कथाएँ सुनाते समय संकेत और अभिनय भी करते थे। धीरे-धीरे यह एक विस्तृत कला बन गई, जिसमें मुखाभिनय और गति से पर्याप्त सौंदर्य लाया गया।

फ़ारसी प्रभाव के कारण मूल नृत्य में काफ़ी परिर्तवन हुए और धीरे-धीरे इसका धार्मिक और नैतिक स्वरूप बदल गया। बाद में यह दरबारी नृत्य बन गया। पुरुष और स्त्रियाँ दोनों यह नृत्य करने लगे। समय बीतने के साथ-साथ कथक केवल सायंकालीन मनोरंजन का साधन बन कर रह गया और नाचने वाली लड़कियाँ पुरुषों का मन बहलाने वाली नर्तकियाँ मात्र बन कर रह गईं।

लखनऊ और जयपुर नरेशों के संरक्षण में कथक पुनर्जीवित हुआ और इसकी दो शैलियाँ 'लखनऊ घराना' और 'जयपुर घराना' विकसित हो गईं।

कथक में पदताल पर अधिक बल दिया जाता है। नर्तक ऐसी पायल बाँधते हैं जिनमें घुँघरुओं की कई पंक्तियाँ होती हैं। इनकी ध्वनि को कौशल से इतना नियंत्रित किया जाता है कि कभी-कभी केवल एक ही घुँघरू बजता है। संगति देने वाला गायक न केवल गाता है बल्कि नृत्य और तबले के बोल भी बोलता है। कथक में तार वाद्य सारंगी से भी संगति की जाती है।

शब्दार्थ

प्रदर्शनीय	–	देखने योग्य
रचयिता	–	बनाने वाला
सुकुमारता	–	कोमलता
अभिव्यक्त	–	बताया गया
प्रशिक्षण	–	training

अलंकृत	–	सजाया हुआ
परिवर्तन	–	बदलाव
पृष्ठभूमि	–	आधार
पदताल	–	पैरों की गति
मुखाभिनय	–	चेहरे द्वारा कला प्रदर्शन
संरक्षण	–	देखभाल
शैली	–	पद्धति, तरीका, style

प्रश्न :–

1. शास्त्रीय नृत्य किसे कहते हैं? इसके प्रमुख रूप कौन–कौन से हैं?
2. भारत का प्राचीनतम शास्त्रीय नृत्य कौन सा है?
3. कथकली का शाब्दिक अर्थ क्या है? यह नृत्य किस प्रकार से किया जाता है?
4. कथक नृत्य में सबसे अधिक बल किस बात पर दिया जाता है?
5. कथक की महत्वपूर्ण शैलियों के नाम लिखिए।
6. भरतनाट्यम के लिए किस शैली का संगीत बजाया जाता है?
7. भारत के कौन से शास्त्रीय नृत्य में नर्तक सिर्फ़ पुरुष होते हैं?
8. रासलीला में किसके प्रेम का वर्णन होता है?

पाठ – 19

संस्कार

हिंदू समाज में जन्म से मृत्यु तक संस्कारों का लंबा सिलसिला है। संस्कार का अर्थ है, 'परिष्कार' या 'शुद्धि'। हमारे जीवन में हिंदू शास्त्रों के अनुसार संस्कारों का विधान किया गया है। ये सोलह संस्कार हैं। (1) गर्भाधान, (2) पुंसवन, (3) सीमंतोन्नयन, (4) जातकर्म (जन्म), (5) नामकरण, (6) निष्क्रमण, (7) अन्नप्राशन, (8) चूड़ाकर्म (मुंडन), (9) कर्णवेध (कर्ण छेदन), (10) उपनयन, (11) समावर्तन, (12) विवाह, (13) गृहस्थ आश्रम, (14) वानप्रस्थ आश्रम, (15) सन्यास आश्रम, (16) अंत्येष्टि। इनमें से पहले तीन संस्कार गर्भाधान, पुंसवन और सीमंतोन्नयन से बच्चे के जन्म से पहले ही हो जाते हैं। अब समाज में इन आरंभिक संस्कारों के कुछ अवशेष ही बच रहे हैं।

जातकर्म संस्कार– जातकर्म बच्चे के जन्म का दिन सभी जगह उत्साह से मनाया जाता है। **नामकरण** बच्चे के नामकरण पर पारिवारिक समारोह किया जाता है। इस अवसर पर बच्चे का अच्छा–सा–नाम रखा जाता है। **अन्नप्राशन संस्कार** – बच्चे के जन्म के छः महीने के बाद **अन्नप्राशन संस्कार** होता है। इस दिन बच्चे को पहली बार खाने के लिए अन्न दिया जाता है। सामान्यतः पहले दिन खीर या मिष्ठान खिलाते हैं। ये संस्कार बच्चे के शारीरिक विकास के चरण हैं। **चूड़ाकर्म संस्कार** – बच्चे के जन्म के एक वर्ष या तीन वर्ष के बाद **चूड़ाकर्म (मुंडन) संस्कार** किया जाता है। इस दिन पहली बार बच्चे के सिर के बाल काटे जाते हैं। **कर्णवेध संस्कार** – तीन या पाँच वर्ष की आयु में बच्चे का **कर्णवेध (कर्ण छेदन) संस्कार** होता है। इसमें बच्चे का कान **छेदा** जाता है। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण भी हैं। 'एक्यूपंक्चर पद्धति' में इसी प्रकार रोगों का उपचार किया जाता है। आजकल केवल लड़कियों के कान छेदने का प्रचलन है।

उपनयन संस्कार – इसके बाद बच्चे का बौद्धिक विकास आरंभ होता है। इसलिए बच्चे की शिक्षा से संबंधित यह संस्कार किया जाता है। पहले समय में इस दिन बच्चे को गुरु के पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए ले जाते थे। 'उपनयन' का अर्थ है, (गुरु के) पास ले जाना। यह संस्कार विद्या आरंभ करने का है। इसी समय बच्चे को 'यज्ञोपवीत' धारण कराया जाता है। इसके बाद वह 'द्विज' हो जाता है। 'द्विज' का अर्थ है दुबारा जन्म लेना।

पहले बच्चा माँ के गर्भ से पैदा होता है। उसका दूसरा जन्म तब होता है जब वह गुरु से शिक्षा ग्रहण कर लेता है। **समावर्तन संस्कार** शिक्षा पूरी करने के बाद होता है। इस दिन बालक अपनी पढ़ाई पूरी करके गुरु के पास से घर लौटता है। अब वह जीवन क्षेत्र या कार्य क्षेत्र में प्रवेश करता है।

विवाह संस्कार – यह संस्कार हिंदू धर्मशास्त्रों में वर्णित सोलह संस्कारों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इस संस्कार के बाद स्त्री–पुरुष नया जीवन शुरू करते हैं। हिंदू समाज में विवाह मात्र दो व्यक्तियों से संबंधित नहीं है। यह एक उच्च सामाजिक एवं धार्मिक कार्य भी समझा जाता है। स्त्री–पुरुष, पति–पत्नी के रूप में जीवन–भर आपसी सहयोग से पारिवारिक दायित्व के निर्वाह का संकल्प करते हैं। बिना स्त्री के कोई भी धार्मिक कार्य पूरा नहीं होता इसलिए स्त्री को 'धर्म–पत्नी' कहा जाता है।

अंत्येष्टि संस्कार– यह संस्कारों में अंतिम संस्कार है। यह संस्कार मरने पर किया जाता है। इस संस्कार में मृत देह को 'चिता' पर रख दिया जाता है। तब उसे पुत्र और पुत्र के न होने पर अन्य सबसे नज़दीकी रिश्तेदार आग देता है। इस संस्कार में भी आग में घी और सामग्री डाली जाती है ताकि वातावरण दूषित न हो।

इसमें संदेह नहीं कि समय के साथ संस्कारों का रूप बदलता गया है। आज भी ये संस्कार हमारे गाँवों में किसी न किसी रूप में किए जाते हैं। शहरों में आधुनिक शिक्षा के प्रसार के कारण लोगों में संस्कारों के प्रति उतनी आस्था नहीं रही है, परंतु इसमें संदेह नहीं कि संस्कारों का जीवन को ऊँचा उठाने में बड़ा महत्व है।

शब्दार्थ

समारोह	–	आयोजन
अवसर	–	मौका
उपचार	–	इलाज
दूषित	–	गंदा
संस्कार	–	rite
अवशेष	–	चिह्न
बौद्धिक	–	बुद्धि संबंधी
महत्वपूर्ण	–	विशेष
दायित्व	–	ज़िम्मेदारी
आस्था	–	विश्वास

प्रश्न :–

1. संस्कार का क्या अर्थ है? शास्त्रों के अनुसार इनकी कितनी संख्या है?
2. भारत में संस्कारों का क्या महत्व है?
3. विद्या आरंभ करने से पहले बालक का कौन सा संस्कार किया जाता है?
4. नामकरण संस्कार समारोह कैसे मनाया जाता है?
5. सोलह संस्कारों में सबसे महत्वपूर्ण संस्कार कौन सा है?

पाठ – 20

दो प्राकृतिक वैद्‌य

प्रकृति ने हमारे उपयोग के लिए फलता–फूलता वनस्पति जगत बनाया है। इस वनस्पति जगत का कोई भी पौधा ऐसा नहीं है जो हमारे लिए किसी काम का न हो। कई पौधे हमें फल देते हैं तो कई फूल और कई हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं।

स्वास्थ्य रक्षा करने वाले पौधों में तुलसी और नीम बड़े उपयोगी पौधे हैं। तुलसी का पौधा लगभग हर घर में पाया जाता है। जब हमें सर्दी–जुकाम हो जाता है अथवा खाँसी–बुख़ार हो जाता है, तो काली मिर्च के साथ पाँच–सात पत्ते पीसकर पीने से सारा रोग दूर हो जाता है। इसके पत्तों में रोग के कीटाणुओं के विष को दूर करने की शक्ति होती है। इसीलिए भगवान के प्रसाद में तुलसी दल डाले जाते हैं। इसकी इतनी उपयोगिता होने के कारण घरों में माताएँ और बहिनें स्नान करने के बाद इसमें नियम से जल देती हैं और उसे 'तुलसी माता का बिरवा' कहकर पुकारती हैं। ताकि हरा–भरा और पत्तियों से भरपूर रहकर यह मनुष्य की अधिक से अधिक सेवा करता रहे। इस गुणकारी पौधे को हरा–भरा रखने में अपना धर्म समझती हैं और उसकी पूजा करती हैं।

तुलसी की भाँति नीम भी बहुत लाभदायक पेड़ है। यह स्वभाव से बड़ा साधारण किंतु उदार है। इसका प्रत्येक भाग मनुष्य के बड़े काम का है। नीम की पत्तियों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो आस–पास की वायु शुद्‌ध हो जाती है। इसकी नई कोंपलें चबाने या पीसकर पीने मे ख़ून साफ़ हो जाता है। पत्तियों को पानी में के साथ उबालकर उस पानी में स्नान करने से चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। नीम के पानी से घाव धोने पर घाव के विषैले कीटाणु समाप्त हो

जाते हैं। पत्तियों को उबालने आदि की परेशानी को कम करने के लिए नीम का साबुन भी बनाया जाने लगा है। कभी-कभी इसकी पत्तियों को जलाकर विषैले कीटाणुओं और मच्छरों को दूर भगाया जाता है। इसकी पत्तियों को कपड़ों तथा अनाज के साथ रखने से उनमें कीड़े नहीं लगते।

नीम की पतली-पतली टहनियाँ दातुन करने के काम आती हैं। टहनी का कड़वापन मसूड़ों के मवाद को कम करता है और कीटाणुओं को नष्ट करता है।

नीम की छाल को घिसकर फोड़े-फुंसियों पर लगाने से वे ठीक हो जाती हैं। नीम के फल को निबौरी कहते हैं। कच्ची निबौरी में दूध होता है। यह कड़वी होती है किंतु पकने पर इसका गूदा मीठा होता है। बच्चे इसे बड़े शौक से खाते हैं। इसकी गुठली बड़े काम की चीज़ है। इस गुठली से तेल निकाला जाता है। नीम के तेल की मालिश से खुजली तथा अन्य प्रकार के चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। इससे साबुन भी बनाया जाता है।

नीम की लकड़ी शीशम, चीड़, देवदार और साल की तरह उतनी अधिक उपयोगी तो नहीं होती लेकिन इस लकड़ी में घुन नहीं लगता। इसे कच्चे मकानों की कड़ियाँ, चौखट और किवाड़ तथा चारपाई के पाए आदि बनाने के काम में लाया जाता है।

नीम की जड़ें ज़मीन के अंदर से नमी खींचकर मिट्टी की ऊपरी परत को नम रखती हैं और उसे जल और वायु द्वारा कटाव से रोकती हैं।

तुलसी दल और कड़वा नीम दोनों ही मानव समाज के बहुत बड़े सेवक हैं। इन्हें यदि प्राकृतिक वैद्य कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

शब्दार्थ

दल	–	पत्ती
कोंपल	–	नई पत्ती

दातुन	–	twig used as tooth brush
गुठली	–	stone of fruit
खुजली	–	scabies
घुन	–	woodworm
अतिशयोक्ति	–	बढ़ा–चढ़ा कर कहना
चर्म रोग	–	त्वचा की बीमारी, Skin disease
वनस्पति	–	पेड़–पौधे
निबौरी	–	नीम का फल
विषैली	–	ज़हरीली

प्रश्न :–

1. स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले वृक्षों के नाम लिखिए।
2. तुलसी की उपयोगिता बताइए।
3. सर्दी–जुकाम में किस पौधे की पत्तियाँ लाभदायक होती हैं?
4. नीम हमारे स्वास्थ्य के लिए किस प्रकार लाभदायक है? लिखिए।
5. नीम की लकड़ी की क्या विशेषता है?
6. नीम के तेल की मालिश से क्या–क्या लाभ होता है?